…क जागरण, वाराणसी (इलाहाबाद) १४ जून १९९१ (८)

…स्लिम मतों की बयार अब कांग्रेसी खेमे की ओर

…धानमंत्री एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष …जीव गांधी की हत्या ने सारे चुनावी …न व अनुमानों को बदल कर रख दिया …माना जा रहा है कि जिस प्रकार स्वर्गीय …गांधी की शहादत ने कांग्रेस को नया …दान किया था उसी प्रकार श्री राजीव …बलिदान को भी लोग आसानी से नहीं …गे।

…जीव गांधी की हत्या से श्री राम लहर …नहीं हो… …त्य के… …य इटर… …रा कि… …ी तथा… …ं उपस्थि… …को जन… …ने अजी… …टियों के… …की सं… …ं। च… …र में… …न की… …स्टर…

विभिन्न वर्गों के मतदाताओं की धारणाएं कुछ और ही कह रही हैं।

नगर पालिका अध्यक्ष श्री मजर अहमद का कहना है कि श्री राजीव गांधी की हत्या की सहानुभूति तो कांग्रेस को अवश्य मिलेगी लेकिन मुस्लिम मतों का जनतादल में जाना ही संभावित माना जा रहा है।

एक प्राइवेट फर्म में प्रबन्धक पद कार्यरत तौफीक अहमद कहते हैं कि श्री राजीव की हत्या … …हरा धक्का लगा है। उनकी …त कांग्रेस को विजयी …ाना उनके प्रति सच्ची …

…के मालिक श्री अख्तर बेग … …िया तो पहले ही होनी …ांधी के नाम पर … लोकसभा तथा … दिलवाएंगे।

…ता श्री नासिर खां के …ी की शहादत ने कांग्रेस … किया है।

…फार अहमद के अनुसार …धी के नाम पर कांग्रेस को…

न्याय सिद्धान्त-मुक्तावली

0 3.5

192



नैयायिकश्रीविश्वनाथपञ्चाननिर्मितकारिकावलीसहित-

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः

शब्दखण्डम्

श्रीस्थ-राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालये कृतन्यायशास्त्राध्यापनेन, शास्त्रार्थ-व्याख्यानवाचस्पतिना, राजसम्बद्धसंस्कृतादर्शशास्त्रार्थमहाविद्यालयप्रधानाचार्येण अष्टोत्तरशतग्रन्थप्रणेतृ-स्वर्गीयपण्डितराज-श्रीवेणीमाधवशास्त्रिणां शास्त्रार्थजगत्प्रसिद्धानां संस्कृताशुकविचक्रवर्त्तिनां तनूजेन सरयूपारीणशुक्लेन श्रीराजनारायणशास्त्रिणा स्वरचितप्रभाख्यसंस्कृतभाष्येण सरस्वत्याख्यराष्ट्रभाषानुवादेन च विभूष्य सम्पादितम्।

तदिदम्

‘संस्कृत-बुकडिपो’ स्वामिभिः

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स महोदयैः

प्रकाशितम्।

[प्र॰ संस्करणम्] सन् १९५४ ई० मूल्यम् ॥=)

प्रकाशकः—
बी० एन० यादव,
अध्यक्ष, मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत बुकडिपो,
कचौड़ीगली, बनारस-१

मुद्रकः—
मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स
बुलानाला, बनारस-

सम्पादकीयम्

व्याकरणशास्त्र के आचार्यों ने शब्द को ब्रह्म ही माना है, जैसे— शब्दब्रह्मणि निष्णातः परब्रह्माधिगच्छति, यच्छब्द आह तदस्माकम् प्रमाणम्, यदक्षरं परं ब्रह्म शब्दतत्त्वं निरञ्जनम्'''इत्यादि। नैयायिकों ने भी शब्दप्रमाण को विशेष महत्त्व देते हुये शाब्दबोध के लिये उत्तम विचार किये हैं। गदाधरभट्टाचार्यकृत शक्तिवाद, व्युत्पत्तिवादग्रन्थ तथा जगदीशतर्कालङ्कार की शब्दशक्तिप्रकाशिका इसके प्रतीक हैं। न्याय-सिद्धान्तमुक्तावली की उपयोगिता सर्वविदित है। इसके रचयिता श्रीविश्वनाथ ने भी परम्परानुसार ही अपने ग्रन्थ में शब्दखण्डनामक एक भाग रखा है। इसमें शक्ति, शक्तिग्राहक, शाब्दबोध के कारण तथा स्वरूप पर विचार किया गया है। इस प्रकरण में अन्यमतों के निरा-करण के साथ ही स्वमतव्यवस्थापन बड़े ही कौशल से प्राप्त है। अपनी निजी विशेषताओं के कारण ही कतिपय विशिष्टपरीक्षाओं में कैवल्येन इसे स्थान प्राप्त है। टीका टिप्पणियाँ भी सुगम तथा सुलभ न थीं। एक-एक खण्ड इनके प्राप्त भी न थे। आज के युग में परीक्षार्थी छात्रों को किसी भी ग्रन्थ की सरल से सरल, सुगम से सुगम संस्कृत टीका, तथा यथासम्भव हिन्दी अनुवाद की विशेष अपेक्षा रहती है। साथ ही साधारण मूल्य। अनेक दृष्टियों से छात्रजनों के हितार्थ हमारे प्रकाशक महोदय ने मुझे इधर प्रवृत्त किया। मेरी भी इच्छा दिनकरी रामरुद्री जैसी बड़ी टीका शास्त्रार्थदृष्ट्या लिखने की थी परन्तु प्रकाशकवशंवद हो अपने उन विचारों को सङ्कुचित करने के लिये बाध्य हुआ। अ प्रभानामक संस्कृतभाष्य तथा सरस्वतीनामक हिन्दी टीका से के इतना ही यत्न किया है कि ग्रन्थ की पंक्तियाँ स्पष्टतया लग जाय

सर्वान्त में शाब्दबोध का एक शास्त्रार्थ 'शाब्दबोधरहस्यम्' इस शीर्षक से दे दिया है, वह भी अतिसंक्षिप्त। उसका पूर्णरूप अखिलभारतीय-संस्कृतसाहित्यसम्मेलन के मुखपत्र 'संस्कृतरत्नाकर' के विक्रम संवत् २००९ की १०, ११, १२ संख्याओं में प्रकाशित हो चुका है। इसका एकमात्र उद्देश्य विद्वज्जन प्रमोद ही है। छात्रों की विशेष आकाङ्क्षाशान्ति के लिये कतिपय वर्षों के वे प्रश्नपत्र जो राजकीय-संस्कृत-महाविद्यालयीय-परीक्षाओं में आचुके हैं, अन्त में दे दिये हैं। इस प्रकार यथामति पुस्तक को उपादेय बनाने का यत्न किया है। यद्यपि संशोधन सम्पादन आदि के द्वारा इस संस्करण के पूर्णशुद्ध्यर्थ सचेष्ट रहा हूँ तथापि मुद्राराक्षसों की कृपाप्राप्त मानवसुलभ त्रुटियों के लिये क्षमार्थी हूँ।

मेरे इस प्रयास पर संस्कृतसमाज के उज्ज्वलरत्न, परमतपस्वी, धर्मप्राण, प्राच्यप्रतीच्योभयविधविद्या के अक्षय्यनिधान, शब्दशास्त्र के मूर्त्तरूप, राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालय काशी के सर्वप्रिय प्रधानाचार्य, परमसम्माननीय स्वनामधन्य पं० श्रीकुबेरनाथशुक्ल एम० ए० व्याकरणाचार्य महोदय की स्निग्ध प्रेरणा रही है। अतः उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

पौ० कृ० ८, २०११ वि०
राजसम्बद्ध-आदर्श-शास्त्रार्थ-
महाविद्यालय, काशी

विनीत—संस्कृतसमाजसेवक—
श्रीराजनारायणशुक्ल
प्रिंसिपल

सम्पादकीयम्

व्याकरणशास्त्र के आचार्यों ने शब्द को ब्रह्म ही माना है, जैसे—शब्दब्रह्मणि निष्णातः परब्रह्माधिगच्छति, यच्छब्द आह तदस्माकम् प्रमाणम्, यदक्षरं परं ब्रह्म शब्दतत्त्वं निरञ्जनम्'''इत्यादि। नैयायिकों ने भी शब्दप्रमाण को विशेष महत्त्व देते हुये शाब्दबोध के लिये उत्तम विचार किये हैं। गदाधरभट्टाचार्यकृत शक्तिवाद, व्युत्पत्तिवादग्रन्थ तथा जगदीशतर्कालङ्कार की शब्दशक्तिप्रकाशिका इसके प्रतीक हैं। न्याय-सिद्धान्तमुक्तावली की उपयोगिता सर्वविदित है। इसके रचयिता श्रीविश्वनाथ ने भी परम्परानुसार ही अपने ग्रन्थ में शब्दखण्डनामक एक भाग रखा है। इसमें शक्ति, शक्तिग्राहक, शाब्दबोध के कारण तथा स्वरूप पर विचार किया गया है। इस प्रकरण में अन्यमतों के निरा-करण के साथ ही स्वमतव्यवस्थापन बड़े ही कौशल से प्राप्त है। अपनी निजी विशेषताओं के कारण ही कतिपय विशिष्टपरीक्षाओं में कैवल्येन इसे स्थान प्राप्त है। टीका टिप्पणियाँ भी सुगम तथा सुलभ न थीं। एक-एक खण्ड इनके प्राप्त भी न थे। आज के युग में परीक्षार्थी छात्रों को किसी भी ग्रन्थ की सरल से सरल, सुगम से सुगम संस्कृत टीका, तथा यथासम्भव हिन्दी अनुवाद की विशेष अपेक्षा रहती है। साथ ही साधारण मूल्य। अनेक दृष्टियों से छात्रजनों के हितार्थ हमारे प्रकाशक महोदय ने मुझे इधर प्रवृत्त किया। मेरी भी इच्छा दिनकरी रामरुद्री जैसी बड़ी टीका शास्त्रार्थदृष्ट्या लिखने की थी परन्तु प्रकाशकवशंवद हो अपने उन विचारों को सङ्कुचित करने के लिये बाध्य हुआ। अस्तु प्रभानामक संस्कृतभाष्य तथा सरस्वतीनामक हिन्दी टीका से केवल इतना ही यत्न किया है कि ग्रन्थ की पंक्तियाँ स्पष्टतया लग जायँ।

सर्वान्त में शाब्दबोध का एक शास्त्रार्थ 'शाब्दबोधरहस्यम्' इस शीर्ष से दे दिया है, वह भी अतिसंक्षिप्त। उसका पूर्णरूप अखिलभारतीय संस्कृतसाहित्यसम्मेलन के मुखपत्र 'संस्कृतरत्नाकर' के विक्रम संवत् २००९ की १०, ११, १२ संख्याओं में प्रकाशित हो चुका है। इसका एकमात्र उद्देश्य विद्वज्जन प्रमोद ही है। छात्रों की विशेष आकाङ्क्षाशान्ति के लिये कतिपय वर्षों के वे प्रश्नपत्र जो राजकीय-संस्कृत-महाविद्यालयीय परीक्षाओं में आचुके हैं, अन्त में दे दिये हैं। इस प्रकार यथामति पुस्तक को उपादेय बनाने का यत्न किया है। यद्यपि संशोधन सम्पादन आदि के द्वारा इस संस्करण के पूर्णशुद्ध्यर्थ सचेष्ट रहा हूँ तथापि मुद्राराक्षसों की कृपाप्राप्त मानवसुलभ त्रुटियों के लिये क्षमार्थी हूँ।

मेरे इस प्रयास पर संस्कृतसमाज के उज्ज्वलरत्न, परमतपस्वी, धर्मप्राण, प्राच्यप्रतीच्योभयविधविद्या के अक्षय्यनिधान, शब्दशास्त्र के मूर्त्तरूप, राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालय काशी के सर्वप्रिय प्रधानाचार्य, परमसम्माननीयस्वनामधन्य पं० श्रीकुबेरनाथशुक्ल एम० ए० व्याकरणाचार्य महोदय की स्निग्ध प्रेरणा रही है। अतः उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

पौ० कृ० ८, २०११ वि०
राजसम्बद्ध-आदर्श-शास्त्रार्थ-महाविद्यालय, काशी

विनीत—संस्कृतसमाजसेवक—
श्रीराजनारायणशुक्ल
प्रिंसिपल

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

सप्रभन्यायसिद्धान्तमुक्तावलीयुतायाः

कारिकावल्याः

शब्दखण्डम् ।

शब्दगुणनिरूपणम्

❀ कारिकावली ❀

पदज्ञानं तु करणं द्वारं तत्र पदार्थधीः ।
शाब्दबोधः फलं तत्र शक्तिधीः सहकारिणी ॥८१॥

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

शाब्दबोधप्रकारं दर्शयति पदज्ञानं त्विति । न तु ज्ञायमानं पदं करणं, पदाभावेऽपि मौनिश्लोकादौ शाब्दबोधात् ।

❀ प्रभा ❀

प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि इति न्यायदर्शनक्रमानुसारेण प्रत्यक्षानुमानोपमानानि तत्प्रमाश्च निरूप्येदानीम् अवशिष्टं शब्दप्रमाणन्तत्प्रमां (शाब्दबोधं) च निरूपयितुं शब्दखण्डमारभते पदज्ञानन्तु इत्यादिना ।

तत्र, पदज्ञानम्, तु, करणम्, पदार्थधीः, द्वारम्, तत्र, शक्तिधीः, सहकारिणी, फलम्, शाब्दबोध इति स्पष्टम् ।

पदज्ञानम् करणम् भवति, नतु वर्तमानकालिकज्ञानविषयीभूतम् पदम् । फलमाह पदाभाव इति । अयम्भावः, मौनिश्लोके पदं न भवति, पदाभावेऽपि

❀ सरस्वती ❀

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान प्रमाणों तथा उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रत्यक्ष, अनुमिति तथा उपमितियों का निरूपण करने के बाद क्रमप्राप्त शब्द-प्रमाण से उत्पन्न शाब्दबोध का निरूपण करते हैं । पदज्ञान करण, पदार्थज्ञान व्यापार, शाब्दबोध ही फल होता है, शक्तिज्ञान सहकारी कारण होता है।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

पदार्थधीरिति। पदजन्यपदार्थस्मरणं व्यापारः। अन्यथा पदज्ञानवतः प्रत्यक्षादिना पदार्थोपस्थितावपि शाब्दबोधापत्तेः।

तत्रापि वृत्त्या पदजन्यत्वं बोध्यम्। अन्यथा घटादिपदात्समवाय-सम्बन्धेनाऽऽकाशस्मरणे जाते आकाशस्यापि शाब्दबोधापत्तेः।

❀ प्रभा ❀

शाब्दबोध इष्ट इदानीम् ज्ञायमानपदस्य करणत्वे स न स्यादिति। पदज्ञानस्य तत्त्वे तु तत् मौनिनोऽपि वर्त्तत एव।

ननु सिद्धान्ततः करणत्वम् व्यापारवदसाधारणकारणस्यैव, पदज्ञानस्य करणत्वे व्यापारापेक्षा भवति, कश्च स इति शङ्कायामाह पदार्थधीरिति। द्वारम्=व्यापारः। तत्त्वं च तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकत्वम्। प्रकृते समन्वयश्च पदज्ञानजन्यः पदज्ञानजन्यशाब्दबोधजनकश्च पदार्थज्ञान (पदार्थस्मरण) रूपो व्यापारः।

ननु पदार्थस्मरणमात्रस्य व्यापारत्वे पदज्ञानवतः पुरुषस्य प्रत्यक्षादिना पदार्थोपस्थितौ (पदार्थस्मृतौ) शाब्दबोधापत्तिरिति चेदत्राह पदजन्येति। तथाच पद-जन्यपदार्थस्मरणस्यैव शाब्दबोधजनकत्वेन प्रकृते पदार्थोपस्थितेः पदजन्यत्वाभावेन आपत्तिपरिहारात्।

ननु तथापि घटपदात् समवायेन आकाश (पदार्थ) स्मृतौ तस्यापि शाब्द-बोधः प्रसज्ज्येतेति चेदत्राह वृत्त्येति। तथाच वृत्त्या पदजन्यपदार्थोपस्थितिर्व्यापार इत्यर्थं वृत्त्या शक्तिलक्षणान्यतराख्यया घटपदात् आकाशस्योपस्थितेरभावान्न तदापत्तिः।

❀ सरस्वती ❀

कारिका में पदविषयकज्ञान कहा गया है, वर्त्तमानकाल में ज्ञात होनेवाला पद नहीं, अन्यथा मौनी के श्लोक में जहाँ पर कि पद है ही नहीं, वहाँ शाब्दबोध न बन पायेगा।

पदार्थस्मरण ही नहीं अपितु पदजन्य पदार्थस्मरण को व्यापार कहना चाहिये, अन्यथा पदज्ञानवान् व्यक्ति को प्रत्यक्ष आदि से पदार्थोपस्थिति हो जाने पर भी शाब्दबोध होने लग जायगा।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वृत्तिश्च शक्तिलक्षणान्यतरसम्बन्धः । अत्रैव शक्तिज्ञानस्योपयोगः । शक्तिग्रहाभावे पदज्ञानेऽपि तत्सम्बन्धेन स्मरणानुपपत्तेः । पदज्ञानस्य हि एकसम्बन्धिज्ञानविधयार्थस्मारकत्वम् ।

शक्तिश्च पदेन सह पदार्थस्य सम्बन्धः । स चास्माच्छब्दादयमर्थः

❀ प्रभा ❀

का वृत्तिरित्यत आह वृत्तिश्चेति । द्वयोर्मध्यं एकोऽन्यतरः 'द्वयोरेकस्य निर्द्धारणे डतरच्' इति पाणिनीयसिद्धः । अन्यतरसम्बन्ध इति । अत्र अन्यतरः अन्यतरात्मकः सम्बन्ध इति समासो न षष्ठीतत्पुरुषः । अत्रैव = पदजन्यपदार्थोपस्थितौ एव । शक्तिज्ञानाभावे शक्यसम्बन्धरूपलक्षणाग्रहस्याप्यसम्भवेन पदपदार्थयोः सम्बन्धज्ञानाभावात् पदज्ञानेन शाब्दबोधप्रयोजकीभूतस्मरणोत्पादनासम्भवात् । एतदभिप्रायेणैव कारिकावल्यां शक्तिज्ञानस्य पदज्ञानसहकारित्वमुक्तमिति ध्येयम् ।

का सा शक्तिरित्याह शक्तिश्चेति । घटपदाद् घटो बोद्धव्य इत्याकारः । यद्यपि ईश्वरेच्छाया ऐक्यात् घटशब्दाद् घटो बोद्धव्य इतीश्वरेच्छा पटेऽपि अस्तीत्यतिप्रसङ्गः, तथापि तत्पदजन्यबोधविषयतात्वावच्छिन्नप्रकारतानिरूपितविशेष्यतासम्बन्धेन ईश्वरेच्छावत्त्वस्य तत्पदशक्यत्वाभ्युपगमेन ईश्वरेच्छानिरूपितघटपदजन्यबोधविषयतात्वावच्छिन्नप्रकारतानिरूपितविशेष्यतायाः पदादौ असत्त्वेन न पटादेस्तादृशसम्बन्धेन ईश्वरेच्छावत्त्वमिति न पटादेर्घटपदशक्यत्वापत्तिरिति हृदयम् ।

❀ सरस्वती ❀

शक्ति तथा लक्षणा इन दोनों में से एक किसी का भी सम्बन्ध ही वृत्ति है । यहीं शक्तिज्ञान का उपयोग होता है । शक्तिज्ञान के अभाव में पदज्ञान होने पर भी उस सम्बन्ध से स्मरण अनुपपन्न हो जाता है । 'पदज्ञान तो एक सम्बन्धी का ज्ञान दूसरे सम्बन्धी का स्मारक होता है' इस नियम से अर्थ का स्मारक होता है ।

पद के साथ पदार्थ के सम्बन्ध को शक्ति कहते हैं । वह भी 'इस शब्द से

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

बोद्धव्य इतीश्वरेच्छारूपः। आधुनिके नाम्नि शक्तिरस्त्येव-'एकादशेऽहनि पिता नाम कुर्यात्' इतीश्वरेच्छायाः सत्त्वात्। आधुनिकसङ्केतिते तु न शक्तिरिति सम्प्रदायः।

नव्यास्तु ईश्वरेच्छा न शक्तिः किन्त्विच्छैव, तेनाधुनिकसङ्केतितेऽपि शक्तिरस्त्येवेत्याहुः।

शक्तिग्रहस्तु व्याकरणादितः। तथाहि—

❀ प्रभा ❀

आधुनिके नाम्नि = आधुनिकैः पित्रादिभिः सङ्केतिते नाम्नि। यस्य निःश्वसितं वेदा इति रीत्या सर्वाभिमतां सर्वप्रमाणमूर्द्धन्यां श्रुतिमुपस्थापयति पूर्वोक्तार्थं द्रढयितुम् एकादशेऽहनीति। ईश्वरेच्छाकारस्तु तत्र 'एकादशाहकालिकपित्रुच्चारण-शब्दजन्यबोधविषयः पित्रादिसङ्केतविशेष्यो भवतु' इति।

आधुनिकसङ्केतिते = आधुनिकमात्रसङ्केतिते नदीवृद्ध्यादिपाणिन्यादितात्पर्यवि-षयीभूते पदे तु। मात्रपदेन ईश्वरव्यावृत्तिः। सम्प्रदायः = प्राचीनसम्प्रदाय इत्यर्थः। तत्र वक्ष्यमाणमस्वरसं हृदि निधायाह नव्यास्तु इति। इच्छामात्रं शक्तिः सा यस्य कस्यापि भवेदीश्वरस्य वानीश्वरस्य। एवं च पाणिन्याद्युक्तनदी-वृद्ध्यादावपि शक्तिरिति भावः। इदम्पदममुमर्थं बोधयतु इति तदाकारः। प्राचीन-नवीनोभयमते गगरी—पटरी—प्रभृत्यपभ्रंशपदे शक्तिभ्रमादेव शाब्दबोध इति विभावनीयम्।

कुतः शक्तिग्रह इत्यत आह शक्तिग्रहस्त्विति। व्याकरणादित इत्यत्र

❀ सरस्वती ❀

ऐसे अर्थ का बोध जानना चाहिये' ऐसा ईश्वरेच्छारूप है। आधुनिक नाम में भी शक्ति है ही, क्योंकि वहाँ पर भी 'उत्पत्ति से ग्यारहवें दिन पिता नामकरण संस्कार करे' इस प्रकार की श्रुतिरूपा ईश्वर की इच्छा प्राप्त है। प्राचीन का मत है कि नवीनों के द्वारा सङ्केतित नामों में शक्ति नहीं। नवीन लोगों का मत है कि ईश्वर की वैसी इच्छा को शक्ति नहीं मानना किन्तु केवल इच्छा को ही मानना चाहिये। अतः आधुनिकसङ्केतित नामों में भी शक्ति होती ही है।

शक्तिज्ञान तो व्याकरण आदि से होता है, जैसा कि कारिका—

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

धातुप्रकृतिप्रत्ययादीनां शक्तिग्रहो व्याकरणाद्भवति। क्वचित्सति बाधके त्यज्यते। यथा वैयाकरणैराख्यातस्य कर्तरि शक्तिरुच्यते। चैत्रः पचतीत्यादौ कर्त्रा सह चैत्रस्याभेदान्वयः। तच्च गौरवात्त्यज्यते। किन्तु कृतौ शक्तिग्रहः, लाघवात्। कृतिश्चैत्रादौ प्रकारीभूय भासते।

❀ प्रभा ❀

पञ्चम्यास्तसिल्, व्याकरणादिभ्य इत्यर्थः। व्याकरणात्, उपमानात्, कोशात्, आप्तवाक्यात्, व्यवहारात्, वाक्यशेषात्, विवृतेः, सिद्धपदस्य सान्निध्यात् च वृद्धाः शक्तिग्रहं वदन्ति इति स्पष्टार्थः। प्रथममाह धात्विति। आदिना समासादिपरिग्रहः, समासेऽपि वैयाकरणैः शक्तिस्वीकारात् 'समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत्' इति। प्रकृतिपदम् प्रातिपदिकार्थकम्। प्रत्ययाः = विभक्ति-तद्धित-आख्यात-कृतः। क्वचित् = स्थलविशेषे। आख्यातस्य = पचति इत्यत्र तिपः। पचति इत्यस्य पाककर्त्ता इति। कर्त्रा सहाभेदसम्बन्धेन अन्वये तु चैत्राभिन्नः पाककर्त्तेति स्थूलार्थः। गौरवादिति। शक्यः कर्त्ता (कृतिमान्) शक्यता कर्तृनिष्ठा, शक्यतावच्छेदकं कर्तृत्वम् (कृतिमत्त्वम्) प्रकृतिजन्यबोधे प्रकारीभूतो भाव इति दिशा कृतिः, सा च नानेति गौरवम्। लाघवादिति। किञ्चिदविशेषितस्य सकलकृतिविष्ठस्य एकस्य कृतित्वस्य शक्यतावच्छेदकत्वे लाघवम्।

❀ सरस्वती ❀

वृद्ध लोग कहते हैं कि व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष, विवरण तथा सिद्धपद के सन्निधान से शक्तिज्ञान होता है।

धातु, प्रकृति, प्रत्यय, आदि का शक्तिज्ञान व्याकरण से होता है, कहीं पर बाधक आ जाने से उसे छोड़ भी दिया जाता है। जैसे—वैयाकरण आख्यात की कर्त्ता में शक्ति मानते हैं, अत एव 'चैत्रः पचति' यहाँ पर कर्तृपदार्थ का कर्त्ता के साथ अभेदसम्बन्ध से अन्वय होता है। उसमें गौरव होगा अतः छोड़ दिया जाता है, उसके बदले लाघवात् कृति में शक्ति मानते हैं, कृति का

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

न च कर्तुरनभिधानाच्चैत्रादिपदानन्तरं तृतीया स्यादिति वाच्यम्, कर्तृसंख्यानभिधानस्य तत्र तन्त्रत्वात् ।

❀ प्रभा ❀

यस्मिन्नर्थे प्रत्ययः क्रियते सः अभिहितः (उक्तः) यत्रार्थे च प्रत्ययो न क्रियते सोऽनभिहितः, अनभिहिते कर्मणि द्वितीया, अनभिहिते च कर्त्तरि तृतीया विभक्तिः, अभिहिते कर्मणि कर्त्तरि च प्रथमाविभक्तिरिति सिद्धान्तः । अत्रेदमनुसन्धेयम्, धातुर्द्विविधः सकर्मकः अकर्मकश्च । तत्र सकर्मकात् कर्मणि कर्त्तरि च प्रत्यया भवन्ति । यदा च सकर्मकात् गमादिधातोः कर्त्तरि प्रत्ययः (लट्-लिट्-प्रभृतिः) तदा कर्त्तुरभिहितत्वात् ततः प्रथमा, कर्मणश्च तदानीमनभिहितत्वात् ततो द्वितीया यथा देवदत्तो ग्रामं गच्छति । यदा च सकर्मकात् कर्मणि प्रत्ययः तदा कर्मणः अभिहितत्वात् ततः प्रथमा, कर्त्तुश्च तदानीमनुक्तत्वात् ततः तृतीया, यथा देवदत्तेन ग्रामः गम्यते । एवम् अकर्मकाद् धातोः कर्त्तरि भावे च प्रत्ययाः भवन्ति । यदा कर्त्तरि प्रत्ययः तदा कर्तुः अभिहितत्वात् ततः प्रथमा, यथा देवदत्तो भवति । यदा च भावे प्रत्ययः तदा कर्त्तुः अनभिहितत्वात् ततः तृतीया, यथा देवदत्तेन भूयते इति ।

एतादृशीम् प्रक्रियाम् मनसि निधाय प्रकृते 'चैत्रः पचति' इत्यत्र लाघवात् आख्यातस्य कृतौ शक्तिस्वीकारे कर्त्तुः अनभिहितत्वात् ततः तृतीयया भाव्यमित्याशङ्कते नचेति । उत्तरयति कर्तृसङ्ख्येति । कर्तृवृत्तिर्या संख्या तस्या अनभिधानं यत्र तत्र 'अनभिहिते' इत्यधिकृत्य 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' इति पाणिनीयशास्त्रप्रवृत्तिः । तत्र = तृतीयायाम् । तन्त्रत्वात् = प्रयोजकत्वात् ।

❀ सरस्वती ❀

भी चैत्र में अन्वय प्रकाररूप से होता है ।

प्रश्न—ऐसी स्थिति में जब कि कर्त्ता में प्रत्यय न होगा तब तो वह अनभिहित (अनुक्त) हो जायगा तब तो चैत्रपद से तृतीया होने लगेगी ?

उत्तर—कर्त्ता में रहनेवाली जो संख्या वह जब अनभिहित होती है तभी तृतीया विभक्ति होती है, अन्यथा नहीं ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

संख्याभिधानयोग्यश्च कर्मत्वाद्यनवरुद्धः प्रथमान्तपदोपस्थाप्यः। कर्मत्वादीत्यस्येतरविशेषणत्वतात्पर्याविषयत्वमर्थः, तेन चैत्र इव मैत्रो गच्छतीत्यादौ न चैत्रे संख्यान्वयः। यत्र कर्मादौ न विशेषणत्वे तात्पर्यं तद्वारणाय प्रथमान्तेति।

यद्वा धात्वर्थातिरिक्ताविशेषणत्वं प्रथमदलार्थः। तेन चैत्र इव मैत्रो

❀ प्रभा ❀

ननु कर्तृसंख्याभिधाने एव किम् प्रयोजकमित्याह संख्याभिधानेति। चैत्रः पचति तण्डुल इत्यादौ कर्मत्वादिलाक्षणिकप्रथमान्तपदोपस्थाप्यतण्डुलादिवारणाय कर्मत्वाद्यनवरुद्ध इति। ननु चैत्र इव मैत्रो गच्छति इत्यत्र आख्यातेन एकवचनत्वरूपेण उक्तायाः संख्यायाः चैत्रेऽन्वयः स्यात् कर्मत्वाद्यनवरुद्धत्वात् प्रथमान्तपदोपस्थाप्यत्वाच्चेति। एवम् पक्वम् अन्नम् भुज्यते इत्यादौ अन्नादौ संख्यान्वयानुपपत्तिः, पाककर्मत्वस्य अन्नेऽन्वयेन कर्मत्वाद्यनवरुद्धत्वाभावात् अत आह कर्मत्वादीत्यस्येति। कर्मत्वपदम् इतरपरम्, अनवरुद्धत्वं च विशेषणतया अविवक्षितम्, फलितार्थं तमाह इतरविशेषणत्वतात्पर्याविषयेति। फलमाह तेनेति। प्रथमान्तपदोपस्थाप्यपदस्य फलं दित्सुराह यत्रेति। विशेषणत्वे इत्यस्य विशेषणत्वमात्रे इत्यर्थः। तथा च तण्डुलम् पचति इत्यादौ यदा विशेषणत्वमुख्यविशेष्यत्वाभ्यां तण्डुलबोधे तात्पर्यं तदा तण्डुले संख्यान्वयवारणाय प्रथमान्तेत्यादीति। रूपान्तरेण फलं विवक्षुराह यद्वेति। धात्वर्थादतिरिक्तस्य अविशेषणत्वमित्यस्य धात्वर्थमात्रविशेषणत्वं सुतराम्। फलमाह तेनेति। इवार्थः

❀ सरस्वती ❀

संख्या के अभिधान के योग्य कर्मत्व आदि से अनवरुद्ध तथा प्रथमान्तपद से उपस्थाप्य ही होता है। कर्मत्वादि इस विशेषण का अर्थ है इतरविशेषणत्वतात्पर्य का अविषय होना। अतः 'चैत्र जैसा मैत्र जाता है' इत्यादि स्थल में चैत्र में संख्या का अन्वय नहीं होता। जहाँ पर कर्म आदि में विशेषणत्व में तात्पर्य नहीं उसके निवारण के लिये प्रथमान्त यह दल दिया गया है।

अथवा धात्वर्थ से अतिरिक्त का अविशेषण हो यह प्रथम दल का अर्थ है।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

गच्छतीत्यत्र चैत्रादेर्वारणम्। स्तोकं पचतीत्यादौ स्तोकादेर्वारणाय च द्वितीयदलम्। तस्य द्वितीयान्तपदोपस्थाप्यत्वाद्वारणमिति।

एवं व्यापारेऽपि न शक्तिर्गौरवात्। रथो गच्छतीत्यादौ तु व्यापारे आश्रयत्वे वा लक्षणा। जानातीत्यादौ आश्रयत्वे, नश्यतीत्यादौ प्रतियोगित्वे निरूढलक्षणा।

उपमानाद्यथा शक्तिग्रहस्तथोक्तम्।

❁ प्रभा ❁

सादृश्यम्, तथा च चैत्रप्रतियोगिकसादृश्यानुयोगी मैत्रः। तत्र धात्वर्थातिरिक्तं सादृश्यम् तद्विशेषणतया चैत्रादेर्वारणम्। द्वितीयदलस्य प्रथमान्तेत्यस्य फलमाह स्तोकमिति। प्रथमान्तपदोपस्थाप्यत्वाभावात् स्तोकादेर्वारणमिति।

मीमांसकस्य 'व्यापारो धात्वर्थः' इति मतं चिखण्डयिषुराह एवमिति। तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकस्यैव व्यापारपदार्थत्वात् कृतित्वजात्यपेक्षया गुरुत्वादिति भावः।

ननु पूर्वोक्तदिशा आख्यातस्य यत्नार्थकता (यत्नः कृतिः) न सम्भवति, तथात्वे रथो गच्छतीत्यत्र अचेतने तदसम्भवाद् व्यभिचारः स्यादत आह रथ इति। प्रकृते उत्तरदेशसंयोगानुकूलक्रिया गम्धात्वर्थः, तदाश्रयत्वमेव प्रतीयते नतु तादृशक्रियानुकूलाश्वादिसंयुक्तरज्ज्वादिसंयोगवत्त्वमिति नव्यमतमाह आश्रयत्वे वेति। जानाति इत्यत्र ज्ञानाश्रयत्वमात्रम् प्रतीयते नतु ज्ञानानुकूला कृतिः।

उपमानस्य शक्तिग्राहकत्वं स्मारयति तथोक्तिमिति। कोशात् शक्तिग्रहं

❁ सरस्वती ❁

उससे पूर्वोक्तस्थल में चैत्र आदि का वारण हो जायगा। स्तोकम् इत्यादि द्वितीयास्थल में दोषनिवारण के लिये द्वितीय 'प्रथमान्त' यह दल है।

इसी प्रकार व्यापार में भी शक्ति मानने से गौरव होता है, अतः वह भी मान्य नहीं, 'रथ जाता है' इत्यादि स्थल में व्यापार में अथवा आश्रयता में लक्षणा से कार्य हो जायगा। 'जानाति' इस स्थल में आश्रयत्व में तथा 'नश्यति' इत्यादिस्थल में प्रतियोगित्व में निरूढलक्षणा हो जाती है।

उपयमान से शक्तिग्रह का प्रकार बतला चुके हैं।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

एवं कोशादपि शक्तिग्रहः । सति बाधके क्वचित्त्यज्यते । यथा नीलादिपदानां नीलरूपादौ नीलादिविशिष्टे च शक्तिः कोशेन व्युत्पादिता तथापि लाघवान्नीलादावेव शक्तिः। नीलादिविशिष्टे तु लक्षणेति ।

एवमाप्तवाक्यादपि । यथा 'कोकिलः पिकपदवाच्य' इत्यादिशब्दात्पिकादिपदानां कोकिले शक्तिग्रहः ।

एवं व्यवहारादपि । यथा प्रयोजकवृद्धेन घटमानयेत्युक्तम्, तच्छ्रुत्वा

❀ प्रभा ❀

विवक्षुराह एवमिति । गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति इत्यमरसिंहरचितनामलिङ्गानुशासनस्य उभयत्र शक्तिग्राहकत्वात् । लाघवात् क्वचिदन्यथापीति स्पष्टयति सति बाधक इति । नीलादिमत्त्वापेक्षया नीलत्वादिजातेर्लघुतया शक्यतावच्छेदकत्वात् । नीलादिविशिष्टबोधः कथमित्यत आह लक्षणेति । शाब्दिकास्तु यः शिष्यते स लुप्यमानार्थाभिधायी इति सिद्धान्तात् नीलमस्त्यस्मिन्निति व्युत्पत्त्या नीलशब्दात् मतुप्प्रत्ययस्य 'गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्ट' इति वार्त्तिकेन लुकि अवशिष्टेन विशिष्टार्थबोधसम्भवे नात्र लक्षणायाः प्रयोजनमिति वदन्ति ।

आप्तः शिष्टो यथार्थवक्ता, तस्य वाक्यादपि शक्तिग्रहमाह एवमिति । व्यवहारादपि तमाह एवमिति ।

❀ सरस्वती ❀

इसी प्रकार कोश से भी शक्तिज्ञान होता है। बाधक उपस्थित होने पर कहीं कहीं वह छोड़ भी दिया जाता है। जैसे नील आदि पदों की नील रूप में तथा नील आदि से विशिष्ट द्रव्य में कोशद्वारा शक्ति निर्णीत है, तथापि लाघव देखकर केवल नील आदि में ही शक्ति मान ली जाती है, नील आदि से विशिष्ट द्रव्य में तो लक्षणा कर ली जाती है।

इसी प्रकार आप्तवाक्य से भी शक्तिज्ञान होता है। जैसे 'कोकिल का नाम पिक है' इस वाक्य से पिक आदि पदों का शक्तिज्ञान कोकिल आदि में होता है।

इसी तरह व्यवहार से भी शक्तिज्ञान होता है। जैसे प्रयोजक (प्रेरक अथवा

✽ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ✽

प्रयोज्यवृद्धेन घट आनीतः, तदवधार्य पार्श्वस्थो बालो घटानयनरूपं कार्यं घटमानयेतिशब्दप्रयोज्यमित्यवधारयति। ततश्च घटं नय गामानयेत्यादिवाक्यादावापोद्वापाभ्यां घटादिपदानां कार्यान्वितघटादौ शक्तिं गृह्णाति। इत्थं च भूतले नीलो घट इत्यादिवाक्यान्न शाब्दबोधः। घटादिपदानां कार्यान्वितघटादिबोधे सामर्थ्यावधारणात् कार्यताबोधं प्रति च लिङादीनां सामर्थ्यात्तदभावान्न शाब्दबोध इति केचित्।

तन्न, प्रथमतः कार्यान्वितघटादौ शक्त्यवधारणेऽपि लाघवेन पश्चात्तस्य परित्यागौचित्यात्। अत एव 'चैत्र पुत्रस्ते जातः, कन्या ते गर्भिणी

✽ प्रभा ✽

आवापोद्वापाभ्यामिति। नयनानयने ताविति अन्वयव्यतिरेकाभ्यामिति भावः।

अन्विताभिधानवादिमीमांसकमतं दूषयितुमुपन्यस्यति कार्यान्वितघटादीति। अन्वितो घटो घटपदशक्यः, घटादिपदानां कार्यान्वितघटादौ शक्तिरिति तदभिप्रायः। दूषयति तन्नेति। कार्यत्वान्वितघटशाब्दत्वापेक्षया घटशाब्दत्वस्य कार्यतावच्छेदकत्वे लाघवं स्पष्टयति लाघवेनेति। अत एव = कार्यत्वाविषयकबोधम्

✽ सरस्वती ✽

प्रयोक्ता) वृद्ध ने 'घट ले आओ' ऐसा कहा, उसे सुनकर प्रयोज्य वृद्ध (जिसको आज्ञा दी गई) ने घट ला दिया। इसे देखकर पास का बालक घट ले आना रूप जो कार्य वह 'घटमानय' इस शब्द से प्रयोज्य है ऐसा निश्चय ज्ञात करता है, तदनन्तर 'घट ले जाओ, गाय ले आओ' इत्यादि वाक्य से आवाप उद्वाप द्वारा घट आदि पदों की कार्यान्वित घट आदि में शक्ति मानता है। इस प्रकार 'भूतल में नीलघट' इत्यादि वाक्य से शाब्दबोध नहीं होता। क्योंकि घटादिपदों की कार्यान्वितघट आदि में शक्ति मान लेने पर कार्यताबोध के प्रति लिङ् आदि की शक्ति की आवश्यकता होने से प्रकृत में उसके अलाभ से शाब्दबोध न होना ठीक ही है। ऐसा किसी का मत है।

वह ठीक नहीं, प्रथमतः कार्यान्वितघट में शक्ति का ज्ञान करने पर भी लाघव के बल से बाद में वह छोड़ भी दिया जाता है। इसी लिये 'चैत्र तुम्हारे पुत्र

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

जाता' इत्यादौ मुखप्रसादमुखमालिन्याभ्यां सुखदुःखे अनुमाय तत्कारणत्वेन परिशेषाच्छाब्दबोधं निर्णीय तद्धेतुतया तं शब्दमवधारयति। तथाच व्यभिचारात्कार्यान्विते न शक्तिः। न च तत्र तं पश्येत्यादि शब्दान्तरमध्याहार्यं, मानाभावात्। चैत्र! पुत्रस्ते जातो मृतश्चेत्यादौ तदभावाच्च। इत्थञ्च लाघवादन्वितघटेऽपि शक्तिं त्यक्त्वा घटपदस्य घटमात्रे शक्तिमवधारयति।

एवं वाक्यशेषादपि शक्तिग्रहः। यथा यवमयश्चरुर्भवतीत्यत्र यवपदस्य दीर्घशूकविशेषे आर्याणां प्रयोगः कङ्गौ च म्लेच्छानाम्। तत्र हि 'यदान्या ओषधयो म्लायन्तेऽथैते मोदमानास्तिष्ठन्ति।'

❀ प्रभा ❀

प्रति पदानां हेतुत्वादेव। अनुमायेति। अनुमानाकारस्तु मुखप्रसादहेतुना मुखमालिन्यहेतुना च कल्पनीयः। तत्कारणत्वेन = सुखदुःखयोः कारणत्वेन। स्वमतेन निष्कर्षमाह इत्थञ्चेति। अन्वितघटे शक्तिकल्पनापेक्षया घटमात्रे तत्कल्पने लाघवादित्यर्थः। ननु यवपदस्य वाक्यशेषाद् दीर्घशूके शक्तिरास्तां कङ्गावपि शक्तिसत्त्वे

❀ सरस्वती ❀

हुआ—तुम्हारी कन्या गर्भिणी हो गई' इत्यादिस्थल में मुख की प्रसन्नता एवम् मलिनता से क्रमशः सुख दुःख का अनुमान कर इस कृत्य के प्रति उस शब्द को ही कारण मान लेता है। अतः व्यभिचार हो जाने से कार्यान्वितघट आदि में शक्ति मानना उचित नहीं। यदि कहिये कि वहाँ पर 'उसे देखो, इत्यादि शब्दान्तर का अध्याहार कर लेना चाहिये तो यह प्रमाणाभाव के कारण उचित नहीं। पूर्वोक्तस्थल में उसका अभाव भी स्पष्ट ही है।

इस प्रकार लाघव से अन्वितघट में भी शक्ति न मानकर घटपद की घटमात्र में शक्ति निश्चित की जाती है।

इसी प्रकार वाक्यशेष से भी शक्तिज्ञान होता है। जैसे 'यवमय चरु होता है' इस स्थल में लम्बी टूँडवाले को आर्य लोग यव कहते हैं, तथा कांगुन को म्लेच्छ लोग। वहाँ पर 'जिस समय अन्य ओषधियाँ म्लान हो जाती हैं उस समय ये

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वसन्ते सर्वसस्यानां जायते पत्रशातनम् ।
मोदमानाश्च तिष्ठन्ति यवाः कणिशशालिनः ॥

इति वाक्यशेषाद्दीर्घशूके शक्तिर्निर्णीयते, कङ्गौ तु शक्तिभ्रमात्प्रयोगः, नानाशक्तिकल्पने गौरवात् । हर्यादिपदे तु विनिगमकाभावान्नानाशक्तिकल्पनम् ।

एवं विवरणादपि शक्तिग्रहः । विवरणं तु तत्समानार्थकपदान्तरेण तदर्थकथनम् । यथा घटोऽस्तीत्यस्य कलशोऽस्तीत्यनेन विवरणाद्घटपदस्य कलशे शक्तिग्रहः । एवं पचतीत्यस्य पाकं करोतीत्यनेन विवरणादाख्यातस्य यत्नार्थकत्वं कल्प्यते ।

❀ प्रभा ❀

बाधकाभाव इत्यत आह नानाशक्तीति । कथं हर्यादिपदे नानाशक्तिरित्यत आह हर्यादिपदे त्विति । विनिगमकाभावादिति । तत्र कोशस्योभयत्र तुल्यत्वात्, प्रकृते च वाक्यशेषस्यैव विनिगमकत्वादिति भावः ।

विवरणात् शक्तिग्रहमाह एवमिति । आख्यातस्य यत्नार्थकत्वमिति । न च विवरणस्य कथं शक्तिग्राहकत्वम् तद्वाचकंपदाभावादिति वाच्यम्, आख्यातं

❀ सरस्वती ❀

प्रसन्न दिखलाई देते हैं' वसन्त में सभी सस्यों के पत्ते गिर जाते हैं परन्तु यव प्रसन्न रहता है, इस वाक्यशेषसे दीर्घशूक ही यवशब्दसे लिया गया, उसी में शक्ति मानी गई । रही बात कांगुन की सो तो शक्तिभ्रमवश वैसा प्रयोग होता है । क्योंकि नानाशक्ति मानने में गौरव हो जायगा । हरि इत्यादि पदों में नानाशक्ति तो विनिगमना के अभाव से मानी जाती है ।

इसी प्रकार विवरण से भी शक्तिज्ञान होता है । उसके समानअर्थ वाले दूसरे पद से उस अर्थ के कहने को विवरण कहते हैं । जैसे 'घट है' इसके लिये 'कलश है' इस विवरण से घटपद की कलश में शक्ति ज्ञात हुई । इसी प्रकार 'पचति' के 'पाक करता है' इस विवरण से आख्यात को यत्नार्थक मान लिया जाता है ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

एवं प्रसिद्धपदस्य सान्निध्यादपि शक्तिग्रहः। यथा इह सहकारतरौ मधुरं पिको रौतीत्यादौ पिकपदस्य कोकिले शक्तिग्रह इति।

तत्र जातावेव शक्तिर्न तु व्यक्तौ, व्यभिचारादानन्त्याच्च। व्यक्तिं विना जातिभानस्यासम्भवाद्व्यक्तेरपि भानमिति केचित्।

❀ प्रभा ❀

घटत्वविशिष्टे शक्तम्, घटत्वविशिष्टशक्तकरोति—प्रतिपादितार्थप्रतिपादकत्वात् इत्यनुमानेन तस्य शक्तिग्राहकत्वात्।

प्रसिद्धस्य प्रसिद्धार्थकस्य पदस्य सान्निध्यात् सन्निधानात् शक्तिग्रहमाह एवमिति। नच तिङर्थधर्मिणि नामार्थान्वयोऽव्युत्पन्न इति नियमेन नेदं शक्तिग्रहस्योदाहरणम् भवितुमर्हतीति वाच्यम्, तस्य नियमस्याप्रामाणिकत्वात्। अत एव 'यो यः शूद्रस्य पचति द्विजोऽन्नं सोऽतिनिन्दित' इत्यादौ तिङर्थधर्मिणि तथा अन्वयो दृश्यते।

शक्तिग्राहकोपायान् निरूप्य कुत्र शक्तिरितिप्रसङ्गात् परमतनिराचिकीर्षया स्वमतव्यवतिष्ठापयिषया चाह तत्रेति। जातावेव = जातिमात्रे, न व्यक्तावपीति। नागृहीतविशेषणा बुद्धिर्विशेष्यमुपसंक्रामतीति नियमेन जातिविशिष्टे शक्तिस्वीकारे विशेषणे जातावपि शक्तिग्रहस्यावश्यकत्वात् जातावेवेति। घटत्वविशिष्टनानाघटेषु शक्तिकल्पनामपेक्ष्य शुद्धघटत्वे शक्तिकल्पने लाघवादिति यावत्। व्यक्तिशक्तिवादे दोषमाह व्यभिचारादिति। तत्र पक्षे यस्यां कस्यांचित् व्यक्तौ शक्तिराहोस्वित् सर्वासु व्यक्तिषु? आद्ये अगृहीतशक्तिकव्यक्तावपि शाब्दबोधोदयेन तत्र शक्तिज्ञानाभावाद् व्यभिचारः स्फुटः। द्वितीय आह आनन्त्यादिति। व्यक्तिभेदेन शक्तिभेदात् शक्त्यानन्त्यमित्यर्थः। केचिदिति। जातेः केवलाया आश्रयहीनायाः

❀ सरस्वती ❀

इसी प्रकार प्रसिद्धपद के सन्निधान से भी शक्तिग्रह होता है। जैसे 'पिक इस आम के पेड़ पर मधुरशब्द कर रहा है' इत्यादि स्थल में पिकपद का कोकिल में शक्तिज्ञान। वहाँ भी जाति में ही शक्ति माननी चाहिये न कि व्यक्ति में, क्योंकि व्यक्ति के नाना होने से व्यभिचार तथा अनन्त शक्तियों का स्वीकार करना होगा। व्यक्ति के बिना जातिभान नहीं हो सकता, अतः उसका भी भान होता है ऐसा

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

तत्र, शक्तिं विना व्यक्तिभानानुपपत्तेः। न च व्यक्तौ लक्षणा, अनुपपत्तिप्रतिसन्धानं विनापि व्यक्तिबोधात्। न च व्यक्तिशक्तावानन्त्यम्, सकलव्यक्त्यावेकत्या एव शक्तेः स्वीकारात्। न चाननुगमः, गोत्वादेरेवानुगमकत्वात्।

❀ प्रभा ❀

व्यक्तिभानाभावे भानासम्भवा (तुल्यसामग्रीभास्यत्वादुभयोः) द् व्यक्तिभानम् अपीति भावः। खण्डयति तत्रेति। तद्विषयकशाब्दबोधम् प्रति तद्विषयकपदजन्यपदार्थोपस्थितेर्हेतुतया जातिपदयोरेव सम्बन्धग्रहे पदरूपैकसम्बन्धिज्ञानात् जातिरूपसम्बन्ध्यन्तरस्यैव स्मरणम् भवति ननु व्यक्तेरिति पदजन्यव्यक्त्युपस्थितेरभावेन व्यक्तिशाब्दबोधासम्भवेन व्यक्तौ शक्तिस्वीकारस्य परमावश्यकत्वादिति भावः। व्यक्तौ शक्त्या तत्त्वाभावेऽपि वृत्त्या पदजन्यपदार्थोपस्थितिं व्यवस्थापयति लक्षणेति। शक्तिलक्षणयोर्द्वयोरपि वृत्तित्वादिति भावः। दूषयति अनुपपत्तीति। गामानयेत्यादौ गोत्वजातेः आनयनान्वयानुपपत्त्या गोपदस्य गवि लक्षणाऽऽस्ताम्, परं गौरस्ति इत्यादौ गोत्वजातेः अस्तित्वाद्यन्वयानुपपत्तेरभावेन (अन्वयानुपपत्तिरूपलक्षणाबीजाभावेन) लक्षणायाः स्वीकर्तुमशक्यत्वादिति भावः।

स्वमते पूर्वोक्तदोषम् परिहरति नचेति। ईश्वरेच्छारूपायाः = शक्तेरेकत्वात् सकलव्यक्तौ तत्स्वीकारे न कोऽपि दोषः। अनुगमकत्वादिति। तथा च गोत्वावच्छिन्नविषयकशाब्दबोधे गोत्वविशिष्टविषयकशक्तिज्ञानत्वेन हेतुतेति न दोषः।

ननु शाब्दबोधे संसर्गज्ञानस्य सर्वाभिमतत्वेन कथम् पदजन्यपदार्थोपस्थितिर्हेतु-

❀ सरस्वती ❀

किसी का मत है। यह मत ठीक नहीं, क्योंकि शक्ति के विना व्यक्ति का भान नहीं हो सकता। व्यक्ति में लक्षणा कर लें यह भी सम्भव नहीं, क्योंकि अनुपपत्तिज्ञान न रहने पर भी व्यक्ति का बोध अनुभव सिद्ध है, लक्षणा तो बिना अनुपपत्ति के कभी न होगी। व्यक्ति में शक्ति मानने पर 'शक्तियाँ अनन्त होंगी' यह दोष भी नहीं, क्योंकि सम्पूर्णव्यक्तियों में एकही शक्ति मान ली जायगी। अनुगम न बन सकेगा सो भी बात नहीं, गोत्व आदि जाति ही अनुगम करा देगी।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

किञ्च गौः शक्येति शक्तिग्रहो यदि तदा व्यक्तौ शक्तिः। यदि तु गोत्वं शक्यमिति शक्तिग्रहस्तदा गोत्वप्रकारकपदार्थस्मरणं शाब्दबोधश्च न स्यात्, समानप्रकारकत्वेन शक्तिज्ञानस्य पदार्थस्मरणं शाब्दबोधं प्रति च हेतुत्वात्। किञ्च गोत्वे यदि शक्तिस्तदा गोत्वत्वं शक्यतावच्छेदकं वाच्यम्, गोत्वत्वं तु गवेतरासमवेतत्वे सति सकलगोसमवेतत्वम्, तथाच गोव्यक्तीनां शक्यतावच्छेदकेऽनुप्रवेशात्तवैव गौरवम्। तस्मात्तत्तज्जात्याकृतिविशिष्टतत्तद्व्यक्तिबोधानुपपत्त्या कल्प्यमाना शक्तिर्जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ विश्राम्यतीति।

❀ प्रभा ❀

रिति नियम इत्यत आह किञ्चेति। हेतुमाह समानेति। शक्तिग्रहे यदंशे गोत्वादिप्रकारकत्वं शाब्दबोधस्यापि तदंशे गोत्वादिप्रकारकत्वमिति समानप्रकारकत्वार्थः।

ननु कार्यत्वप्रभृत्युपाधिप्रकारकशाब्दबोधस्थले तादृशसमानप्रकारकत्वस्य तदनुमतत्वेऽपि जातिप्रकारकशाब्दबोधस्थले तादृशसमानप्रकारकत्वं न तदिष्टमित्यत आह द्वितीयं किञ्चेति। उपसंहरति तस्मादिति। जात्याकृतिव्यक्तिषु त्रिषु एकैव

❀ सरस्वती ❀

और भी 'गौ शक्य है, ऐसा शक्तिग्रह होने पर व्यक्ति में शक्ति मानी जाय, यदि 'गोत्व शक्य है' ऐसा शक्तिग्रह होगा तो गोत्वप्रकारक पदार्थस्मरण तथा शाब्दबोध नहीं होगा, क्योंकि पदार्थस्मरण तथा शाब्दबोध दोनों ही के प्रति समानप्रकारक शक्तिज्ञान को कारण माना गया है।

और भी यदि गोत्व में शक्ति मानी जाय तो गोत्वत्व को शक्यतावच्छेदक कहना पड़ेगा, गोत्वत्व भी गो से अन्य में समवायसम्बन्ध से न रहता हुआ सकलगो में समवायेन रहनेवाला ही धर्म होगा, इस प्रकार शक्यतावच्छेदक में सकल गोव्यक्तियों का प्रवेश हो जाने से गौरव हो जायगा।

अतः तत्तत्जातिआकृति से विशिष्ट तत्तद्व्यक्तिबोध की अनुपपत्ति होने से कल्पित की जानेवाली शक्ति जाति आकृति से विशिष्टव्यक्ति में ही मान ली जानी चाहिये।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

शक्तं पदम्, तच्चतुर्विधम्--कचिद्यौगिकं, कचिद्रूढं, कचिद्योगरूढं, कचिद्यौगिकरूढम्, तथाहि--

यत्रावयवार्थ एव बुध्यते तद्यौगिकम्, यथा पाचकादिपदम्।

यत्रावयवशक्तिनैरपेक्ष्येण समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्रूढम्, यथा गोमण्डलादिपदम्।

यत्र तु अवयवशक्तिविषये समुदायशक्तिरप्यस्ति तद्योगरूढम्, यथा पङ्कजादिपदम्। तथाहि--पङ्कजपदमवयवशक्त्या पङ्कजनिकर्तृरूपमर्थं बोधयति, समुदायशक्त्या च पद्मत्वेन रूपेण पद्मं बोधयति। न च केवलयाऽवयवशक्त्या कुमुदे प्रयोगः स्यादिति वाच्यम्, रूढिज्ञानस्य केवल-

❀ प्रभा ❀

शक्तिरिति (बोधनाय न्यायदर्शने 'जात्याकृतिव्यक्तयः पदार्थः' इत्येकवचनम् पदार्थशब्दात् इति।

पदं लक्षयति शक्तमिति। सर्वत्र कचित्पदं किञ्चिदर्थकम्। सविवरणमुदाहरति तथाहीति।

❀ सरस्वती ❀

शक्त को पद कहते हैं, वह चार प्रकार का १ यौगिक २ रूढ ३ योगरूढ ४ यौगिकरूढ। जहाँ पर केवल अवयवों के अर्थ की ही प्रतीति हो उसे यौगिक कहते हैं, जैसे—पाचक इत्यादि पद।

जहाँ पर अवयवशक्ति की अपेक्षा न कर केवल समुदायशक्ति से ही बोध होता है वह रूढ कहा जाता है, जैसे गो, मण्डल आदि शब्द।

जहाँ पर अवयवशक्ति के विषय में समुदायशक्ति भी है वह योगरूढ है, जैसे पङ्कज आदि पद। क्योंकि पङ्कजपद अवयवशक्ति से पङ्कजनिकर्तृरूप अर्थ का बोध कराता है, समुदायशक्ति से पद्मत्वेन रूपेण पद्म का बोधक होता है। केवल अवयवशक्ति से कुमुद में प्रयोग नहीं होता, क्योंकि रूढिज्ञान केवलयौगिक

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

यौगिकार्थज्ञाने प्रतिबन्धकत्वादिति प्राञ्चः।

वस्तुतस्तु समुदायशक्त्युपस्थितपद्मेऽवयवार्थपङ्कजनिकर्तुरन्वयो भवति, सान्निध्यात्।

यत्र तु रूढ्यर्थस्य बाधः प्रतिसन्धीयते तत्र लक्षणया कुमुदादेर्बोधः। यत्र तु कुमुदत्वेन रूपेण बोधे न तात्पर्यज्ञानं पद्मत्वस्य च बाधस्तत्रावयवशक्तिमात्रेण निर्वाह इत्यप्याहुः।

यत्र तु स्थलपद्मादावयवार्थबाधस्तत्र समुदायशक्त्या पद्मत्वेन रूपेण बोधः। यदि तु स्थलपङ्कजं विजातीयमेव तदा लक्षणयैवेति।

यत्र तु यौगिकार्थरूढ्यर्थयोः स्वातन्त्र्येण बोधस्तद्यौगिकरूढम्, यथोद्भिदादिपदम्। तत्र हि उद्भेदनकर्ता तरुगुल्मादिरपि बुध्यते, यागविशे-

❀ प्रभा ❀

अवयवशक्तिमात्रेणेति। मात्रपदेन लक्षणाव्यवच्छेदः। निर्वाहः = पङ्कजनिकर्तृत्वेन कुमुदशाब्दबोधनिर्वाह इत्यर्थः। पद्मत्वेन रूपेणेति। पद्मत्वेनैव बोध इत्यर्थः। लक्षणयैवेति। रूढ्यर्थतावच्छेदकपद्मत्वजातेस्तत्राभानेन रूढ्या तद्बोध-

❀ सरस्वती ❀

अर्थ के ज्ञान का प्रतिबन्धक हो जाता है यह प्राचीनों का मत है।

वस्तुतः समुदायशक्ति से उपस्थितपद्म में अवयवार्थ पङ्कजनिकर्ता का अन्वय सन्निधान के कारण हो जायगा।

जहाँ पर रुढ्यर्थ का बाधज्ञान हो वहाँ पर लक्षणा से कुमुद आदि का बोध होता है। जहाँ पर कुमुदत्वेन बोध में तात्पर्यज्ञान नहीं और पद्मत्व का बाध है वहाँ पर केवल अवयवशक्ति से निर्वाह होता है ऐसा भी कहते हैं।

जहाँ स्थलपद्म आदि में अवयवार्थ का बाध है वहाँ समुदायशक्ति से पद्मत्वेन बोध होगा। यदि स्थलपद्म को पद्म से भिन्न, विलक्षण मान लिया जाय तब तो लक्षणा से ही बोध आवश्यक होगा।

जहाँ पर यौगिक तथा रूढि दोनों ही अर्थ स्वतन्त्ररूप से होते हों उसे यौगिकरूढ कहते हैं। जैसे उद्भिद् आदि पद। इससे तरु, गुल्म आदि तथा

❀ कारिकावली ❀

लक्षणा शक्यसम्बन्धस्तात्पर्यानुपपत्तितः ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

घोऽपीति ॥ ८१ ॥

लक्षणेति । गङ्गायां घोष इत्यादौ गङ्गापदस्य शक्यार्थे प्रवाहरूपे घोषस्यान्वयानुपपत्तिस्तात्पर्यानुपपत्तिर्वा यत्र प्रतिसन्धीयते तत्र लक्षणया तीरस्य बोध इति ।

सा च शक्यसम्बन्धरूपा । तथाहि—प्रवाहरूपशक्यार्थसम्बन्धस्य तीरे गृहीतत्वात्तीरस्य स्मरणम्, ततः शाब्दबोधः ।

परन्तु यद्यन्वयानुपपत्तिर्लक्षणाबीजं स्यात्तदा यष्टीः प्रवेशयेत्यत्र लक्षणा न स्यात्-यष्टिषु प्रवेशान्वयस्यानुपपत्तेरभावात् । तेन यष्टिप्रवेशे

❀ प्रभा ❀

नासम्भवादिति भावः ।

क्रमप्राप्तांलक्षणावृत्तिं निरूपयति लक्षणेति । सा द्विविधा जहत्स्वार्था अजहत्स्वार्था च । शक्यार्थाविषयकशाब्दबोधजनिका प्रथमा, शक्यार्थतदन्योभयविषयकशाब्दबोधजनिका द्वितीया । आद्याम् प्रदर्शयति गङ्गायामिति । गङ्गापदं भगीरथरथखातावच्छिन्नजलप्रवाहे शक्तम् । वक्ष्यमाणास्वरसादाह तात्पर्येति । लक्षणास्वरूपमाह सा चेति । अन्वयानुपपत्तिमात्रस्य लक्षणाबीजत्वे दोषमाह तदेति । स्वाभिमतमाह तेनेति ।

❀ सरस्वती ❀

यागविशेष दोनों ही का बोध माननीय है ।

शक्यसम्बन्ध को ही लक्षणा कहते हैं, वह तात्पर्य की अनुपपत्ति से होती है । 'गङ्गायाम् घोषः' इत्यादि स्थल में गङ्गापद के शक्यार्थ प्रवाह में घोष की अन्वयानुपपत्ति अथवा तात्पर्यानुपपत्ति का जब ज्ञान हो तब लक्षणा से तीर का बोध होता है । वह भी शक्यसम्बन्धरूप होती है । जैसे—प्रवाहरूप शक्यार्थ का सम्बन्ध तीर में गृहीत है, अतः तीर का स्मरण होगा, तदनन्तर शाब्दबोध ।

यदि अन्वय की अनुपपत्ति को ही लक्षणा का कारण मान लेंगे तो 'यष्टीः प्रवेशय' यहाँ पर लक्षणा न हो सकेगी, क्योंकि यष्टि में प्रवेशान्वय की अनुपपत्ति

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

भोजनतात्पर्यानुपपत्त्या यष्टिधरेषु लक्षणा ।

एवं काकेभ्यो दधि रक्ष्यतामित्यादौ काकपदस्य दध्युपघातके लक्षणा, सर्वतो दधिरक्षायास्तात्पर्यविषयत्वात् ।

एवं छत्रिणो यान्तीत्यादौ छत्रिपदस्यैकसार्थवाहित्वे लक्षणा । इयमेवाजहत्स्वार्था लक्षणेत्युच्यते । एकसार्थवाहित्वेन रूपेण छत्रितदन्ययोर्बोधात् ।

❀ प्रभा ❀

द्वितीयां लक्षणाम् प्रदर्शयति एवमिति । दध्युपघातके = दध्युपघातकत्वविशिष्टे । एकसार्थवाहित्वे = एकसार्थवाहित्वविशिष्टे ।

ननु छत्रमस्यास्तीत्यर्थे इनिप्रत्यये छत्रिन् इत्यस्य निष्पत्तया प्रकृतिप्रत्ययसमुदायरूपत्वेन वाक्यत्वाद् वाक्ये च शक्तिविरहेण लक्षणाविरहस्यापि सूपपादत्वमिति चेन्न, छत्रिपदलक्षणाभिधानस्य वाक्यलक्षणावादिमताभिप्रायकत्वात् । न्यायमते तु छत्रपदस्यैव एकसार्थवाहित्वे लक्षणा, प्रत्ययार्थश्च सम्बन्धी । तथा च एकसार्थवन्तो गच्छन्तीत्यन्वयः । एकसार्थवाहित्वं च एकसार्थ एव, नत्वेकसार्थगन्तृत्वम्, उद्देश्यतावच्छेदकविधेययोरैक्ये अभेदेन अन्वयस्याव्युत्पन्नतया गमनकर्तृत्वविशिष्टे गमनस्यान्वयबोधे आकाङ्क्षाविरहात् निराकाङ्क्षतया यान्तीत्यस्यानन्वयापत्तेः । वाक्यल-

❀ सरस्वती ❀

नहीं है । किन्तु यष्टिप्रवेश में भोजन के तात्पर्य की अनुपपत्ति होने से यष्टिधर में लक्षणा होती है ।

इसी प्रकार 'काकेभ्यः…' इस स्थल में काकपद की दधि नष्ट करनेवाले मात्र में लक्षणा होती है, क्योंकि 'किसी प्रकार से दही की रक्षा हो न कि केवल काक से ही' यही तात्पर्य है ।

इसी प्रकार 'छत्रिणः…' यहाँ पर छत्रिपद की एकसाथ चलने वाले में लक्षणा की जाती है । इसे ही अजहत्स्वार्था लक्षणा कहते हैं; अर्थात् जो अपने अर्थ को न छोड़ती हुई लक्षणा कही जाती हो । अतः छत्री अछत्री सभी का प्रकृत में एकरूप से बोध हुआ ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

यदि चान्वयानुपपत्तिर्लक्षणाबीजं स्यात्, तदा क्वचिद्गङ्गापदस्य तीरे, क्वचिद्घोषपदस्य मत्स्यादौ लक्षणेति नियमो न स्यात्।

इदन्तु बोध्यम्। शक्यार्थसम्बन्धो यदि तीरत्वेन रूपेण गृहीतस्तदा तीरत्वेन तीरबोधः। यदि तु गङ्गातीरत्वेन रूपेण गृहीतस्तदा तेनैव रूपेण स्मरणम्। अत एव लक्ष्यतावच्छेदके न लक्षणा, तत्प्रकारकबोधस्य तत्र लक्षणां विनाप्युपपत्तेः। परन्तु एवं क्रमेण शक्यतावच्छेदकेऽपि शक्तिर्न स्यात्, तत्प्रकारकशक्यार्थस्मरणं प्रति तत्पदस्य सामर्थ्यमित्यस्य सुवचत्वादिति विभावनीयम्।

यत्र तु शक्यार्थस्य परम्परासम्बन्धरूपा लक्षणा सा लक्षितलक्षणेत्यु-

❀ प्रभा ❀

क्षणावादिमताश्रयाच्च न अजहत्स्वार्थतोक्तिर्विरुध्यते।

क्वचित् = गङ्गापदस्य तीरतात्पर्यग्रहस्थले। क्वचित् = घोषपदस्य मत्स्यादौ तात्पर्यग्रहस्थले। अत एव = तद्धर्मविशिष्टे लक्षणाग्रहस्य तेन रूपेण उपस्थिति-शाब्दबोधौ प्रति हेतुत्वादेव।

लक्षितलक्षणां विलक्षणामाह यत्र त्विति। परम्परेति। स्ववाच्यरेफद्वय-

❀ सरस्वती ❀

यदि अन्वयानुपपत्ति को ही लक्षणा का कारण मानेंगे तो गङ्गापद की कहीं तीर में, घोषपद की कहीं मछली आदि में लक्षणा है, ऐसा नियम नहीं बन सकेगा।

आवश्यक—शक्यार्थसम्बन्ध यदि तीरत्वरूप से गृहीत हो तो तीर का बोध, यदि गङ्गातीरत्वरूप से गृहीत हो तो उसी रूप से स्मरण होता है। अतएव लक्ष्यतावच्छेदक में लक्षणा नहीं, क्योंकि लक्ष्यतावच्छेदकप्रकारकबोध लक्षणा के बिना भी बन जायगा। परन्तु इस क्रम से शक्यतावच्छेदक से भी शक्ति न होगी। तत्प्रकारकशक्यार्थस्मरण के प्रति तत्पद को सामर्थ्य है ऐसा कहा जा सकता है।

जहाँ पर शक्यार्थ की परम्परासम्बन्धरूपलक्षणा हो उसे लक्षितलक्षणा

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

च्यते । यथा द्विरेफादिपदात् रेफद्वयसम्बन्धो भ्रमरपदे ज्ञायते, भ्रमर-पदस्य च सम्बन्धो भ्रमरे ज्ञायते इति तत्र लक्षितलक्षणा ।

किन्तु लाक्षणिकं पदं नानुभावकम् । लाक्षणिकार्थस्य शाब्दबोधे तु पदान्तरं कारणम्—शक्तिलक्षणान्यतरसम्बन्धेनेतरपदार्थान्वितस्वशक्यार्थ-शाब्दबोधं प्रति पदानां सामर्थ्यावधारणात् ।

❀ प्रभा ❀

घटितपदवाच्यत्वादिरूपेतिभावः । नच द्वौ रेफौ यत्रेति व्युत्पत्त्या द्विरेफपदेन स्वशक्यरेफद्वयसम्बन्धिभ्रमरपदं लक्ष्यते, भ्रमरपदेन च शक्त्या भ्रमरः कल्प्यते इत्येतावतैव सामञ्जस्येऽलंद्विरेफपदस्य भ्रमरे परम्परासम्बन्धरूपलक्षणया । तथा चात्र लक्षितेन लक्षणेति तृतीयातत्पुरुषः लक्षितलक्षणाशब्दार्थः स्फुट इति वाच्यम्, तथासति द्विरेफमानयेत्यादितः कर्मत्वादौ भ्रमरपदार्थान्वयानुपपत्तेः, प्रत्ययानां प्रकृत्यर्थान्वितस्वार्थबोधकत्वनियमात् ।

ननु तच्छाब्दबोधे तच्छक्तपदज्ञानत्वेन हेतुत्वात् लाक्षणिकशाब्दबोधः कथं स्या-दित्यत आह किन्त्विति । अनुभावकम् = शाब्दानुभवजनकम् । तथा च लाक्ष-णिके पदे स्मारिका शक्तिरेव, न आनुभविकी इति भावः । ननु तर्हि लाक्षणि-कार्थस्य कथं शाब्दबोधे भानमित्याशङ्क्य लाक्षणिकपदसमभिव्याहृतशक्तपदान्तरमेव लाक्षणिकार्थान्वितस्वार्थशाब्दबोधम् प्रति कारणम् इति शक्तपदान्तरादेव शाब्द-बोधे लाक्षणिकार्थस्यापि भानमिति समाधत्ते लाक्षणिकार्थस्येति । पदान्तरम् = समभिव्याहृतं शक्तम्पदम् । तथा च लाक्षणिकपदसमभिव्याहृतं शक्तम् पदं लाक्ष-णिकपदस्मारितलक्ष्यार्थविषयकशाब्दबोधजनकमिति हृदयम् । शक्तिलक्षणेति ।

❀ सरस्वती ❀

कहते हैं । जैसे—द्विरेफपद से दो रेफ का सम्बन्ध भ्रमरपद में ज्ञात होता है, भ्रमरपद का सम्बन्ध भ्रमर में, इस प्रकार लक्षितलक्षणा बनी ।

किन्तु लाक्षणिक पद अनुभावक नहीं होता । लाक्षणिक अर्थ के शाब्दबोध में दूसरा पद कारण होता है । शक्ति अथवा लक्षणा किसी एक सम्बन्ध से इतर-पदार्थ में अन्वितस्वशक्यार्थबोध के प्रति पदों का सामर्थ्य माना जाता है ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वाक्ये तु शक्तेरभावाच्छक्यसम्बन्धरूपा लक्षणापि नास्ति। यत्र गभीरायां नद्यां घोष इत्युक्तं तत्र नदीपदस्य नदीतीरे लक्षणा। गभीरापदार्थस्य नद्या सहाभेदेनान्वयः, क्वचिदेकदेशान्वयस्यापि स्वीकृतत्वात्।

यदि तत्रैकदेशान्वयो न स्वीक्रियते तदा नदीपदस्य गभीरनदीतीरे लक्षणा, गभीरपदं तात्पर्यग्राहकम्।

❀ प्रभा ❀

अन्यतरसम्बन्धेन य इतरः पदार्थः (इतरपदजन्यस्मृतिविषयः) तदन्वितो यः स्वार्थ इति।

ननु शक्यसम्बन्धो लक्षणा, वाक्यस्य च शक्याप्रसिद्धया तत्र लक्षणा न स्यादिति मीमांसकाक्षेपम् इष्टापत्त्या समाधत्ते वाक्ये त्विति। ननु गभीरायां नद्यां घोष इत्यादौ नदीपदस्य नदीतीरे लक्षणास्वीकारे गभीरपदार्थस्यैकदेशान्वयापत्त्या पदलक्षणायाः असम्भवेन वाक्यलक्षणा आवश्यकतां भजते इत्यत आह यत्र गभीरेति। पदार्थः पदार्थेनान्वेति नतु पदार्थैकदेशेनेति व्युत्पत्तेरपवादमाह क्वचिदिति। चैत्रस्य गुरुकुलम्, देवदत्तस्य दासभार्येत्यादिनित्यसाकाङ्क्षपदार्थातिरिक्तस्थले एव तस्याः प्रसरादिति तात्पर्यम्। नदीपदस्येति। नच विनिगमकाभावेन गभीरपदस्य लक्षणा, नदीपदमस्तु तात्पर्यग्राहकमिति वाच्यम्, प्रत्ययानाम् प्रकृत्यर्थान्वितस्वार्थबोधकत्वव्युत्पत्त्या उत्तरपद एव लक्षणेति निर्वाहात्। मीमांसकशास्त्रार्थस्तु दिनकरीकृतां जिज्ञासुभिस्तत एव द्रष्टव्यः। न स्वीक्रियत इति। नच घटशून्यम् इत्यत्र शून्यपदस्य अभाववदर्थकतया तदेकदेशेऽभावे एव घटत्वावच्छि-

❀ सरस्वती ❀

वाक्य में तो शक्ति के अभाव से शक्यसम्बन्धरूप लक्षणा भी नहीं है। जहाँ पर 'गभीरायाम्...' ऐसा कहा गया वहाँ पर नदीपद की नदीतीर में लक्षणा, गभीरापदार्थ का नदी के साथ अभेदसम्बन्ध से अन्वय होता है, क्योंकि पदार्थ के एक देश का भी अन्वय कहीं कहीं माना जाता है।

यदि वहाँ पर एकदेश का अन्वय न मानें तो नदीपद की गभीरनदीतीर में लक्षणा, गभीरपद तात्पर्यग्राहक है ऐसा कहना चाहिये।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

बहुव्रीहावप्येवम् । तत्र हि चित्रगुपदादौ यदैकदेशान्वयः स्वीक्रियते तदा गोपदस्य गोस्वामिनि लक्षणा, गवि चित्राभेदान्वयः । यदि तत्रैकदेशान्वयो न स्वीक्रियते, तदा गोपदस्य चित्रगोस्वामिनि लक्षणा, चित्रपदं तात्पर्यग्राहकम् । एवमारूढवानरो वृक्ष इत्यत्र वानरपदस्य वानरारोहणकर्मणि लक्षणा, आरूढपदं तात्पर्यग्राहकम् । एवमन्यत्रापि बोध्यम् ।

तत्पुरुषे तु पूर्वपदे लक्षणा । तथाहि—राजपुरुष इत्यादौ राजपदार्थेन पुरुषपदार्थस्य साक्षान्नान्वयो, निपातातिरिक्तनामार्थयोर्भेदेनान्वयबोधस्याव्युत्पन्नत्वात् । अन्यथा राजा पुरुष इत्यत्रापि तथान्वयबोधः स्यात् ।

❀ प्रभा ❀

त्वप्रतियोगिताकत्वसम्बन्धेन घटपदार्थस्यान्वयः स्वीक्रियते इति वाच्यम्, पदार्थैकदेशे पदार्थान्तरस्य तादात्म्यसम्बन्धेनैव अन्वयास्वीकारो नतु भेदसम्बन्धेनापीति तात्पर्यात् ।

निपातेति । ननु निपातमात्रार्थस्य नामार्थान्तरेण भेदान्वयस्वीकारे चन्द्र इव मुखम् इत्यत्र इवार्थे सादृश्ये चन्द्रस्य निरूपितत्वसम्बन्धेन अन्वयो न स्यात्, 'चादयोऽसत्त्वे' इति पाणिनीयानुशासने द्रव्यभिन्नार्थकानां चादीनामेव निपात-

❀ सरस्वती ❀

बहुव्रीहिसमास में भी ऐसे ही करना चाहिये, वहाँ पर चित्रगुपद आदि में जब एकदेशान्वय मानें तो गोपद की गोस्वामी में लक्षणा, गो में चित्रा का अभेदसम्बन्ध से अन्वय होगा । यदि एकदेशान्वय न मानें तो गोपद की चित्रगोस्वामी मे लक्षणा, चित्रपद तात्पर्यग्राहक माना जायगा ।

इसी प्रकार 'आरूढ···' यहाँ पर वानरपद की वानरारोहणकर्म में लक्षणा तथा आरूढपद को तात्पर्यग्राहक मानना होगा । अन्यस्थलों में भी ऐसे ही जानना चाहिये ।

तत्पुरुष में तो पूर्वपद में लक्षणा होती है । जैसे राजपुरुष इत्यादि में राजपदार्थ का पुरुषपदार्थ से साक्षात् अन्वय नहीं; क्योंकि निपातातिरिक्तप्रातिपदिकार्थों का भेदसम्बन्ध से अन्वयबोध अमान्य है । अन्यथा राजा पुरुष यहाँ पर भी वैसा अन्वयबोध अनिवार्य हो जायगा ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

घटः पटो न इत्यादौ घटपटाभ्यां नञःसाक्षादेवान्वयान्निपातातिरिक्तेति। नीलो घट इत्यादौ नामार्थयोरभेदसम्बन्धेनान्वयाद् भेदेनेति। न च राजपुरुष इत्यादौ लुप्तविभक्तेः स्मरणं कल्प्यमिति वाच्यम्, अस्मृतविभक्तेरपि ततो बोधोदयात्। तस्माद्राजपदादौ राजसम्बन्धिनि लक्षणा, तस्य च पुरुषेण सहाभेदान्वयः।

द्वन्द्वे तु धवखदिरौ छिन्धीत्यादौ धवः खदिरश्च विभक्त्यर्थद्वित्व-

❀ प्रभा ❀

संज्ञाकरणात् इवशब्दस्य चादिगणे पाठाभावात् इति चेन्न, तत्र व्युत्पत्तौ निपातपदम् अव्ययमात्रोपलक्षकमिति (निपातपदमव्ययार्थकमेवेति) व्याख्यानेन तस्यापि संग्रहसम्भवात्। साक्षादेवेति। ननु व्युत्पत्तौ साक्षादित्यनावश्यकमिति चेन्न, भूतले घट इत्यादावाधेयतासम्बन्धेन घटभूतलयोरन्वयात् तन्निवेशावश्यकत्वात्।

राजसम्बन्धिनीति। परेतु राजपुरुष इत्यादितत्पुरुषे लक्षणां न मन्यन्ते, व्युत्पत्तिवैचित्र्येण स्वत्वादिसम्बन्धेनैव राज्ञः पुरुषादावन्वयबोधस्वीकारात्। अन्यथा 'दशैते राजमतङ्गास्तस्यैवामी तुरङ्गमाः' इत्यादौ तच्छब्देन राज्ञः परामर्शो न स्यात् तस्यैकदेशत्वादिति वदन्ति।

द्वन्द्व इति। चार्थे द्वन्द्वः, समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थाः। तत्र समुच्चये (घटं पटं चानय) अन्वाचये (भिक्षामट गांचानय) इत्यादौ समासो न

❀ सरस्वती ❀

'घट पट नहीं, यहाँ पर नञ् का साक्षात् अन्वय इष्ट है, अतः निपातातिरिक्त यह विशेषण लगाया। नीलघट यहाँ पर प्रातिपदिकार्थों का अभेदसम्बन्ध से अन्वय अभीष्ट है, अतः 'भेदसम्बन्ध से' ऐसा निवेश किया।

यदि राजपुरुष इत्यादि में लुप्तविभक्ति के स्मरण की कल्पना करें तो अस्मृतविभक्ति से भी बनने वाला बोध बिगड़ जायगा। अतः राजपद आदि की राजसम्बन्धी में लक्षणा और उसका पुरुष के साथ अभेदसम्बन्ध से अन्वय ही माननीय होगा।

द्वन्द्व में 'धव...' यहाँ पर धव तथा खदिर दोनों ही विभक्त्यर्थ जो द्वित्व

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

प्रकारेण बुध्यते, तत्र न लक्षणा। न च साहित्ये लक्षणेति वाच्यम्, साहित्यशून्ययोरपि द्वन्द्वदर्शनात्। न चैकक्रियान्वयित्वरूपं साहित्यमस्तीति वाच्यम्? क्रियाभेदेऽपि धवखदिरौ पश्य छिन्धीत्यादिदर्शनात्, साहित्यस्याननुभवाच्च।

अत एव 'राजपुरोहितौ सायुज्यकामौ यजेयाताम्' इत्यत्र लक्षणाभावाद् द्वन्द्व आश्रीयते। तस्मात्साहित्यं नार्थः, किन्तु वास्तवो भेदो यत्र तत्र द्वन्द्वः। न च नीलघटयोरभेद इत्यादौ कथमिति वाच्यम्, तत्र

❀ प्रभा ❀

भवति, सामर्थ्यविरहात्। केवलं समाहारे इतरेतरयोगे च समासो द्वन्द्वाख्यः। फलतः साहित्ये द्वन्द्व इति प्रवादः। तत्रसहवृत्तित्वरूपं साहित्यम् एकक्रियान्वयित्वरूपंच। साहित्यशून्ययोः द्वन्द्वो न भवति अपितु साहित्यसम्पन्नयोरेवेति मतं क्षिपन्नाह साहित्येति। एकदेशवृत्तित्वरूपं प्रथमं साहित्यं तु न वक्तुं शक्यते, तादृशसाहित्यशून्ययोरपि द्वन्द्वदर्शनात्। द्वितीयं खण्डयितुं शङ्कते नचेति। एकक्रियान्वयित्वं च एकविषयतानिरूपितसंसर्गतानिरूपितशाब्दबोधीयविषयत्वम्। वस्तुतस्तु विरुद्धानामपि कालिकसम्बन्धेन सहवृत्तित्वमक्षतमेवेति न क्वापि तत्पक्षे द्वन्द्वानुपपत्तिः। साहित्ये द्वन्द्व इति पक्षं निरस्य सिद्धान्तमाचष्टे किन्त्विति। यत्र भेदस्तत्रैव चकारः प्रयुज्यत इति चार्थस्य भेदव्याप्यत्वाद् भेदे द्वन्द्व इति हृदिकृत्याह भेद इति।

❀ सरस्वती ❀

उसके प्रकार से भासित होते हैं, अतः लक्षणा की आवश्यकता नहीं। साहित्य में लक्षणा होती है ऐसा भी कहना ठीक नहीं, क्योंकि साहित्यशून्य पदों का भी द्वन्द्वसमास मिलता है। यदि कहें कि एकक्रिया में अन्वयित्वरूप साहित्य रहेगा ही तो यह भी उचित नहीं, क्योंकि क्रिया के भेद रहने पर द्वन्द्व देखा जाता है। वहाँ साहित्य का भी अनुभव नहीं होता।

अत एव 'राजपुरो...' यहाँ पर लक्षणा न होने से द्वन्द्वसमास होता है, अतः साहित्य कोई वस्तु यहाँ अपेक्षित नहीं, अपितु वास्तविक भेद जहाँ पर हो वहाँ ही द्वन्द्व होता है। नीलघट का द्वन्द्व बनाने के लिए यह कहना होगा कि

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

नीलपदस्य नीलत्वे, घटपदस्य घटत्वे लक्षणा, अभेद इत्यस्य चाश्रयाभेद इत्यर्थात् ।

समाहारद्वन्द्वे तु यदि समाहारोऽप्यनुभूयत इत्युच्यते, तदाऽहिनकुलमित्यादौ परपदेऽहिनकुलसमाहारे लक्षणा, पूर्वपदं तु तात्पर्यग्राहकम् । न च भेरीमृदङ्गं वादयेत्यत्र कथं समाहारस्यान्वयस्तस्यापेक्षाबुद्धिविशेषरूपस्य वादनासम्भवादिति वाच्यम्, परम्परासम्बन्धेन तदन्वयात् । एवं पञ्चमूलीत्यादावपि ।

परे तु अहिनकुलमित्यादौ अहिर्नकुलश्च बुध्यते, प्रत्येकमेकत्वान्वयः । समाहारसंज्ञा च यत्रैकत्वं 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य' इत्यादिसूत्रेणोक्तं तत्रैव,

❀ प्रभा ❀

आश्रयाभेद इति । केचित्तु पदार्थत्वम् पदजन्यप्रतीतिविषयत्वम्, तथा च पदभेदे, पदार्थभेदे, पदार्थतावच्छेदकभेदे वा द्वन्द्व इति । नीलघटयोरित्यत्र तु नीलत्वघटत्वयोः पदार्थतावच्छेदकयोर्भेदाद् द्वन्द्वः । वादनासम्भवेति । शब्दजनकसंयोगानुकूलव्यापारो वादनपदार्थः । परम्परासम्बन्धेनेति । स्वाश्रयवृत्तित्वरूपेणेत्यर्थः । तदन्वयात् = वादनकर्मत्वान्वयात् । नव्यमतमाह परे त्विति ।

❀ सरस्वती ❀

नीलपद की नीलत्व में, घटपद की घटत्व में लक्षणा, अभेद का अर्थ आश्रय का अभेद कहना होगा ।

समाहारद्वन्द्व में तो यदि समाहार का भी अनुभव होता है ऐसा कहें तो अहिनकुल यहाँ पर परपद की अहिनकुलसमाहार में लक्षणा और पूर्वपद तात्पर्यग्राहक ऐसा मानना ही होगा ।

भेरी मृदङ्गं···इस स्थल में अपेक्षाबुद्धिविशेषरूप समाहार का अन्वय कैसे ? क्योंकि उसका बजाना असम्भव है, अतः परम्परासम्बन्ध से अन्वय मानना चाहिये । इसी प्रकार पञ्चमूली इत्यादि में भी ।

दूसरे तो कहते हैं कि अहिनकुलम् यहाँ पर अहि तथा नकुल का बोध होता है, प्रत्येक में एकत्व का अन्वय होता है, समाहारसंज्ञा तो जहाँ पर 'द्वन्द्वश्च···'

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

अन्यत्रैकवचनमसाध्वित्याहुः ।

पितरौ श्वशुरावित्यादौ पितृपदे जनकदम्पत्योः, श्वशुरपदे स्त्रीजनकदम्पत्योर्लक्षणा । एवमन्यत्रापि । घटा इत्यादौ न लक्षणा, घटत्वेन रूपेण नानाघटोपस्थितिसम्भवात् ।

कर्मधारयस्थले तु, नीलोत्पलमित्यादावभेदसम्बन्धेन नीलपदार्थ उत्पलपदार्थे प्रकारः, तत्र च न लक्षणा ।

अत एव 'निषादस्थपतिं याजयेत्' इत्यत्र न तत्पुरुषः, लक्षणापत्तेः, किन्तु कर्मधारयः, लक्षणाभावात् । न च निषादस्य सङ्करजातिविशेषस्य वेदानधिकाराद्याजनासम्भव इति वाच्यम्, निषादस्य विद्याप्रयुक्तेस्ततः

❀ प्रभा ❀

वेदानधिकारादिति । स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् इति श्रुत्या निषेधादिति भावः । ननु निषादस्य विद्याकल्पने गौरवमित्यत आह लाघवेनेति । ननु स्त्रीशूद्रौ इति श्रुतेरप्रामाण्यापत्तिभिया लाघवमकिञ्चित्करम् । शूद्रपदस्य निषादेतरशूद्रपरत्वे निषादस्य वेदान्तराध्ययनप्रसङ्गः, अध्ययनपदस्य यागोपयुक्ताध्ययनेतराध्ययनपरत्वे च शूद्रान्तरस्यापि यागोपयुक्ताध्ययनप्रसङ्ग इति चेन्न, तत्र विशेषतः प्राप्ताध्ययने-

❀ सरस्वती ❀

इस सूत्र से उक्त एकत्व कहा है वहीं पर होगी । अन्यस्थानों में एकवचन साधु नहीं ।

'पितरौ श्वशुरौ' यहाँ पर पितृपद की जनकदम्पती तथा श्वशुरपद की स्त्री के जनकदम्पती में लक्षणा है । इसी प्रकार अन्य स्थलों में भी । घटा इस स्थल में लक्षणा नहीं, क्योंकि घटत्वेन नानाघट की उपस्थिति होती ही है ।

'नीलोत्पलम्' इत्यादि कर्मधारयस्थल में तो अभेदसम्बन्ध से नीलपदार्थ उत्पलपदार्थ में प्रकार है । वहाँ लक्षणा नहीं ।

अत एव 'निषाद...' इस स्थल में लक्षणा के भय से तत्पुरुषसमास नहीं, किन्तु कर्मधारय ही होता है । यदि यह कहें कि शूद्र मात्र को वेद नहीं पढ़ना चाहिये ऐसा शास्त्रसिद्धान्त है पुनः याग के लिये वह सङ्करजातिनिषाद कैसे अधि-

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

एव कल्पनीयत्वात् । लाघवेन मुख्यार्थस्यान्वये तदनुपपत्त्या तत्कल्पनायाः फलमुखगौरवतयाऽदोषत्वादिति ।

उपकुम्भमर्धपिप्पलीत्यादौ परपदे तत्सम्बन्धिनि लक्षणा, पूर्वपदार्थप्रधानतया चान्वयबोध इति । इत्थञ्च समासे न क्वापि शक्तिः, पदशक्त्यैव निर्वाहादिति ।

❀ प्रभा ❀

तराध्ययनपरत्वात् अध्ययनपदस्य । तेन निषादस्य यागोपयुक्ताध्ययनेतराध्ययननिषेधः, शूद्रान्तरस्य तु अध्ययनमात्रनिषेध इति । उपकुम्भेति । कुम्भस्य समीपमित्यस्वपदविग्रहो नित्यसमासोऽव्ययीभावः । कुम्भपदलक्षितस्य कुम्भसम्बन्धिनः उपपदार्थसमीपे अभेदान्वयात् कुम्भसम्बन्ध्यभिन्नसमीपम् इति उपपदार्थविशेष्यकोऽन्वयबोधः । अर्द्धं पिप्पल्या इति विग्रहे 'अर्द्धं नपुंसकम्' इति पाणिनीयेन समासः ।

'समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत्' इति वैयाकरणमतीयसमासशक्तिवादं खण्डयन्नुपसंहरति इत्थं चेति । समासघटकीभूतपदशक्तिलक्षणाभ्यामेव निर्वाहात् समासशक्तिस्वीकारो नोचित इति भावः ।

❀ सरस्वती ❀

कारी बनाया जा सकेगा ? तो इस श्रुति से ऐसा अधिकार उक्त होने के कारण विद्या की भी कल्पना कर ली जायगी । लाघव से मुख्यार्थ के अन्वय में वह अनुपपन्न हो जायगा, अतः फलमुख गौरव को सह्य मानकर वह कल्पना अनुचित नहीं ।

उपकुम्भम् , अर्द्धपिप्पली इत्यादि समासस्थल में परपद की तत्सम्बन्धी में लक्षणा, पूर्वपदार्थ की प्रधानता से अन्वयबोध होता है ।

इस प्रकार पदशक्ति से ही निर्वाह हो जायगा, किसी भी समास में शक्ति मानना आवश्यक नहीं ।

❀ कारिकावली ❀

आसत्तियोग्यताकाङ्क्षातात्पर्यज्ञानमिष्यते ॥ ८२ ॥
कारणं, सन्निधानं तु पदस्यासत्तिरुच्यते ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

आसत्तिरिति । आसत्तिज्ञानं योग्यताज्ञानम् आकाङ्क्षाज्ञानं तात्पर्यज्ञानं च शाब्दबोधे कारणम् । तत्रासत्तिपदार्थमाह सन्निधानं त्विति । अन्वयप्रतियोग्यनुयोगिपदयोरव्यवधानमासत्तिः, तज्ज्ञानं शाब्दबोधे कारणम्, क्वचिद्व्यवहितेऽप्यव्यवधानभ्रमाच्छाब्दबोधादिति केचित् ।

❀ प्रभा ❀

शब्दबोधे कानि कारणानीत्याह आसत्तीति । आसत्ति-योग्यता-आकाङ्क्षा-तात्पर्याणां द्वन्द्वं विधाय ज्ञानशब्देन तत्पुरुषः । ज्ञानशब्दस्य च प्रत्येकं सम्बन्धः, 'द्वन्द्वादौ द्वन्द्वमध्ये द्वन्द्वान्ते च श्रूयमाणम्पदम् प्रत्येकमभिसम्बध्यते' इति नियमात् । तत्र 'अधिशीङ्स्थासाङ्कर्म' इति सूत्रे द्वन्द्वादौ श्रूयमाणस्य अधिशब्दस्य, 'आङ्किविविणत्वेषूपसर्गत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः' इति वार्त्तिके द्वन्द्वमध्ये श्रूयमाणस्य विविशब्दस्य, "प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा" इति सूत्रे द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणस्य मात्रशब्दस्य च प्रत्येकं सम्बन्धो नियमोदाहरणम् । प्रकृते आसत्तिरितिपाठे विसर्गान्ते आसत्तिपदमासत्तिज्ञानपरमिति विवेकः । तथाच आसत्तिज्ञानं योग्यताज्ञानम् आकाङ्क्षाज्ञानम् तात्पर्यज्ञानं च शाब्दबोधे कारणमिति संक्षेपः ।

आद्यमासत्तिपदार्थं लक्षयति सन्निधानमिति । पदस्य सन्निधानं तु आसत्तिः उच्यते इति कारिकायाम् । ययोः पदयोः परस्परार्थान्वयबोधजनकत्वेन वक्तृतात्पर्यविषयता, तयोरव्यवधानमासत्तिरिति तदर्थः ।

❀ सरस्वती ❀

शाब्दबोध में आसत्तिज्ञान, योग्यताज्ञान, आकाङ्क्षाज्ञान तथा तात्पर्यज्ञान कारण होते हैं ।

अन्वय के प्रतियोगी तथा अनुयोगी पदों के अव्यवधान को आसत्ति कहते हैं, उसका ज्ञान शाब्दबोध में कारण होता है । कहीं पर व्यवहित रहने पर भी अव्यवधान के भ्रम से शाब्दबोध होता है, यह किसी का मत है ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वस्तुतस्तु अव्यवधानज्ञानस्यानपेक्षितत्वात् यत्पदार्थेन यत्पदार्थस्यान्वयोऽपेक्षितस्तयोरव्यवधानेनोपस्थितिः शाब्दबोधे कारणम् । तेन गिरिर्भुक्तमग्निमान्देवदत्तेनेत्यादौ न शाब्दबोधः । नीलो घटो द्रव्यं पट इत्यादावासत्तिभ्रमाच्छाब्दबोधः । आसत्तिभ्रमाच्छाब्दभ्रमाभावेऽपि न क्षतिः ।

ननु यत्र छत्री कुण्डली वासस्वी देवदत्त इत्याद्युक्तं तत्रोत्तरपदस्मरणेन पूर्वपदस्मरणस्य नाशादव्यवधानेन तदुत्तरपदस्मरणासम्भव इति चेद् न; प्रत्येकपदानुभवजन्यसंस्कारैश्चरमस्य तावत्पदविषयकस्मरणस्याव्यवधानेनोत्पत्तेः । नानासन्निकर्षैरेकप्रत्यक्षस्येव नानासंस्कारैरेकस्मरणो-

❀ प्रभा ❀

सिद्धान्तमाह वस्तुतस्त्विति । फलमाह तेनेति । नातिव्याप्तिरिति निष्कर्षः । तात्पर्येति । तात्पर्यविषयीभूतान्वयबोधविषयीभूतार्थबोधकपदान्वयरूपा । अनेकपदघटितवाक्यस्थले अव्यवधानेन पदोपस्थितेरसम्भवादासत्त्यभावात् कथं निर्वाह इत्याशङ्कते नन्विति ।

अव्यवधानेनोत्पत्तेरिति । तत्तत्स्मरणव्यक्तीनाम् अभेदेऽपि अव्यवधानसम्भवादिति भावः । तथाच तत्तत्पदविषयकसमूहालम्बनमेकमेव स्मरणं भवति,

❀ सरस्वती ❀

वस्तुतः अव्यवधानज्ञान की अपेक्षा नहीं अपितु जिस पदार्थ का जिस पदार्थ के साथ बोध अपेक्षित हो उनकी अव्यवधान से उपस्थिति ही शाब्दबोध में कारण होती है । अतः 'गिरिर्भुक्त···' यहाँ पर शाब्दबोध नहीं होता । 'नीलघट द्रव्य पट' इत्यादि स्थल में तो आसत्ति के भ्रम से शाब्दबोध होता है । आसत्तिभ्रम से शाब्दभ्रम न हो तो भी कोई हानि नहीं ।

प्रश्नः—जहाँ पर छत्री···इत्यादि कहा वहाँ पर उत्तरपद के स्मरण से पूर्वपदस्मरण का नाश हो जाने से अव्यवधान से उसके उत्तरपद का स्मरण असम्भव होगा ?

उत्तर—प्रत्येकपद के अनुभव से उत्पन्न संस्कारों से अन्तिम समस्तपद-

अथवा

लाक्षणिकम्पदं नानुभावकमिति निरस्य जातावेव शक्तिरिति मतं निराक्रियताम् ।

३—योग्यताज्ञानस्य कारणता बाधनिश्चयाभावेनान्यथासिद्धेति सम्यक् प्रदर्श्य तद्युक्तं नवेति विचार्य बाधितस्थले बोधो भवति न वेति निर्णीय विभुविशेषगुणानां यौगपद्यासम्भवात् शाब्दबोधे षड्विधज्ञानानां कारणता कथमिति स्पष्टं लिखत । ६

सन् १९५२

१—परामर्शलक्षणं निर्दिश्य तस्यानुमितौ कारणत्वं व्यवस्थाप्य 'व्याप्तिः साध्यवदन्यस्मिन्' इति लक्षणे द्रव्यं विशिष्टसत्त्वादित्यत्राव्याप्तिप्रदर्शननिरसनप्रकार उपपाद्यताम् । ६

२—हेत्वाभाससामान्यलक्षणं ससमन्वयं निर्दिशत । ७

अथवा

शाब्दबोधस्य किं लक्षणम्, कीदृक्पदार्थोपस्थितेर्व्यापारत्वम्, संस्कारानुभवाभ्याम् पदार्थोपस्थितिसम्भवे तत्र पदज्ञानस्य कथं करणत्वम् ? शक्तिग्राहकाश्च के ?

[illegible]आकाङ्क्षाज्ञान-तात्पर्यज्ञानयोश्च शाब्दबोधे कारणत्वं निरूपयत । ९

सन् १९५३

[illegible]ष्ठाभावेति सिद्धान्तलक्षणे अवच्छेदकत्वानुसरणस्य फलं प्रतिपाद्य [illegible] प्रतियोगिव्यधिकरणो बोध्य इति ग्रन्थरीत्या स्फोर्यताम् । १०

[illegible]भासाः सोदाहरणलक्षणभेदाः लेख्याः । ५

अथवा

संख्याभिधानयोग्यश्च कर्मत्वाद्यनवरुद्धः प्रथमान्तपदोपस्थाप्यः इत्येष ग्रन्थः ससन्दर्भः पदकृत्यप्रदर्शनपुरस्सरं लेख्यः।

२—जातावेव शक्तिः, द्वन्द्वे साहित्ये लक्षणेति मीमांसकमतद्वयं निराकृत्य योग-रूढशब्दविषये मतभेदम् प्रदर्शयत। १०

सन् १९५४

१—अनुमितौ व्याप्तिविशिष्टवैशिष्ट्यावगाहिज्ञानं कारणम् इति कस्य मतम्? कया रीत्या च साधितम्? ८

२—पक्षतालक्षणं सपदकृत्यम् प्रतिपाद्य सत्प्रतिपक्षस्थले संशयरूपानुमिति-र्भवति इति मतमुपपाद्य खण्डयत। १०

अथवा

घटादिपदानां कार्यान्वितघटादौ शक्तिरिति मतं समर्थ्य प्रत्याख्याय च तेषां घटादिमात्रे शक्तिरिति मतं साध्यताम्।

३—योग्यताज्ञान-तात्पर्यज्ञानयोः शाब्दबोधे कारणत्वाकारणत्वे मतभेदेनोप-पादयत। ७

पूर्व-
म्भव
मुस्तपद-

प्रकाशिता ग्रन्थाः

काशीस्थ-राजसम्बद्ध-संस्कृतादर्श-शास्त्रार्थमहाविद्या[illegible]
चार्येण आचार्य-श्रीराजनारायणशास्त्रि[illegible]
महोदयेन सम्पादिता विनिर्मिताश्च ।

न्यायशास्त्रे—

१ व्युत्पत्तिवादः—शास्त्रार्थकलासहितः
२ प्रामाण्यवादः—प्रभासमन्वितः
३ अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः—विवृति
४ सादृश्यशास्त्रार्थकला—सटिप्पणा
५ समवायसम्बन्धसाधनम्
६ तर्कसंग्रहः—टिप्पणीसहितः
७ कुसुमाञ्जलिः—यन्त्रस्था
८ तर्कभाषा—प्रभा-प्रसारिणीयुता
९ तर्कामृतम्—प्रभासरस्वती
१० सिद्धान्तमुक्तावली—प्रभा
११ अर्थसंग्रहः—मीमांसाप्रभा

व्याकरणे—

१२ कौमुदीकल्पलतिका
१३ परिष्कारदर्पणः
१४ परिभाषेन्दुशेखरः—शास्त्रार्थकला
१५ मनोरमाशब्दरत्नप्रश्नोत्तरावली—खण्डत्रय
१६ न्यास-कल्पलता
१७ परिभाषेन्दु-प्रश्नपञ्जिका
१८ व्युत्पत्तिवाद-प्रश्नोत्तरी
१९ प्रयोगशास्त्रार्थकल[illegible]
२० न्यास-शास्त्रार्थकल[illegible]
२१ वैयाकरणभूषणसारः—यन्त्रस्थः
२२ लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला
२३ रूपप्रभा

काव्ये—

२४ रामवनगमनम्—प्रभासहितम्
२५ विदुलोपाख्यानम्— „ „

२६ काव्यमीमांसा—

धर्मशास्त्रे—

२७ गायत्रीमन्त्रभाष्यम्
२८ अर्हत्तिथिभास्करः

पुराणे—

२९ श्रीमद्भागवत-शास्त्रार्थकला
३० गोपीगीतम्

सामान्यदर्शने—

३१ गोकुलदर्शनकलानिधिः

दर्शने—

३२ सांख्यकारिका—यन्त्रस्था

हिन्दी—

३३ श्रेष्ठ जीवन

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली, बनारस-१

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वृत्तिश्च शक्तिलक्षणान्यतरसम्बन्धः। अत्रैव शक्तिज्ञानस्योपयोगः। शक्तिग्रहाभावे पदज्ञानेऽपि तत्सम्बन्धेन स्मरणानुपपत्तेः। पदज्ञानस्य हि एकसम्बन्धिज्ञानविधयार्थस्मारकत्वम्।

शक्तिश्च पदेन सह पदार्थस्य सम्बन्धः। स चास्माच्छब्दादयमर्थः

❀ प्रभा ❀

का वृत्तिरित्यत आह वृत्तिश्चेति। द्वयोर्मध्य एकोऽन्यतरः 'द्वयोरेकस्य निर्द्धारणे डतरच्' इति पाणिनीयसिद्धः। अन्यतरसम्बन्ध इति। अत्र अन्यतरः अन्यतरात्मकः सम्बन्ध इति समासो न षष्ठीतत्पुरुषः। अत्रैव = पदजन्यपदार्थोपस्थितौ एव। शक्तिज्ञानाभावे शक्यसम्बन्धरूपलक्षणाग्रहस्याप्यसम्भवेन पद-पदार्थयोः सम्बन्धज्ञानाभावात् पदज्ञानेन शाब्दबोधप्रयोजकीभूतस्मरणोत्पादनासम्भवात्। एतदभिप्रायेणैव कारिकावल्यां शक्तिज्ञानस्य पदज्ञानसहकारित्वमुक्तमिति ध्येयम्।

का सा शक्तिरित्याह शक्तिश्चेति। घटपदाद् घटो बोद्धव्य इत्याकारः। यद्यपि ईश्वरेच्छाया ऐक्यात् घटशब्दाद् घटो बोद्धव्य इतीश्वरेच्छा पटेऽपि अस्तीत्यतिप्रसङ्गः, तथापि तत्पदजन्यबोधविषयतात्वावच्छिन्नप्रकारतानिरूपितविशेष्यता-सम्बन्धेन ईश्वरेच्छावत्त्वस्य तत्पदशक्यत्वाभ्युपगमेन ईश्वरेच्छानिरूपितघटपदजन्य-बोधविषयतात्वावच्छिन्नप्रकारतानिरूपितविशेष्यतायाः पदादौ असत्त्वेन न पटादेस्तादृशसम्बन्धेन ईश्वरेच्छावत्त्वमिति न पटादेर्घटपदशक्यत्वापत्तिरिति हृदयम्।

❀ सरस्वती ❀

शक्ति तथा लक्षणा इन दोनों में से एक किसी का भी सम्बन्ध ही वृत्ति है। यहीं शक्तिज्ञान का उपयोग होता है। शक्तिज्ञान के अभाव में पदज्ञान होने पर भी उस सम्बन्ध से स्मरण अनुपपन्न हो जाता है। 'पदज्ञान तो एक सम्बन्धी का ज्ञान दूसरे सम्बन्धी का स्मारक होता है' इस नियम से अर्थ का स्मारक होता है।

पद के साथ पदार्थ के सम्बन्ध को शक्ति कहते हैं। वह भी 'इस शब्द से

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

बोद्धव्य इतीश्वरेच्छारूपः। आधुनिके नाम्नि शक्तिरस्त्येव-'एकादशेऽहनि पिता नाम कुर्यात्' इतीश्वरेच्छायाः सत्त्वात्। आधुनिकसङ्केतिते तु न शक्तिरिति सम्प्रदायः।

नव्यास्तु ईश्वरेच्छा न शक्तिः किन्त्विच्छैव, तेनाधुनिकसङ्केतितेऽपि शक्तिरस्त्येवेत्याहुः।

शक्तिग्रहस्तु व्याकरणादितः। तथाहि—

❀ प्रभा ❀

आधुनिके नाम्नि = आधुनिकैः पित्रादिभिः सङ्केतिते नाम्नि। यस्य निःश्वसितं वेदा इति रीत्या सर्वाभिमतां सर्वप्रमाणमूर्धन्यां श्रुतिमुपस्थापयति पूर्वोक्तार्थं द्रढयितुम् एकादशेऽहनीति। ईश्वरेच्छाकारस्तु तत्र 'एकादशाहकालिकपित्रुच्चारण-शब्दजन्यबोधविषयः पित्रादिसङ्केतविशेष्यो भवतु' इति।

आधुनिकसङ्केतिते = आधुनिकमात्रसङ्केतिते नदीवृद्ध्यादिपाणिन्यादितात्पर्यवि-षयीभूते पदे तु। मात्रपदेन ईश्वरव्यावृत्तिः। सम्प्रदायः = प्राचीनसम्प्रदाय इत्यर्थः। तत्र वक्ष्यमाणमस्वरसं हृदि निधायाह नव्यास्तु इति। इच्छामात्रं शक्तिः सा यस्य कस्यापि भवेदीश्वरस्य वानीश्वरस्य। एवं च पाणिन्याद्युक्तनदी-वृद्ध्यादावपि शक्तिरिति भावः। इदम्पदममुमर्थं बोधयतु इति तदाकारः। प्राचीन-नवीनोभयमते गगरी–पटरी–प्रभृत्यपभ्रंशपदे शक्तिभ्रमादेव शाब्दबोध इति विभावनीयम्।

कुतः शक्तिग्रह इत्यत आह शक्तिग्रहस्त्विति। व्याकरणादित इत्यत्र

❀ सरस्वती ❀

ऐसे अर्थ का बोध जानना चाहिये' ऐसा ईश्वरेच्छारूप है। आधुनिक नाम में भी शक्ति है ही, क्योंकि वहाँ पर भी 'उत्पत्ति से ग्यारहवें दिन पिता नामकरण संस्कार करे' इस प्रकार की श्रुतिरूपा ईश्वर की इच्छा प्राप्त है। प्राचीन का मत है कि नवीनों के द्वारा सङ्केतित नामों में शक्ति नहीं। नवीन लोगों का मत है कि ईश्वर की वैसी इच्छा को शक्ति नहीं मानना किन्तु केवल इच्छा को ही मानना चाहिये। अतः आधुनिकसङ्केतित नामों में भी शक्ति होती ही है।

शक्तिज्ञान तो व्याकरण आदि से होता है, जैसा कि कारिका—

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

धातुप्रकृतिप्रत्ययादीनां शक्तिग्रहो व्याकरणाद्भवति। क्वचित्सति बाधके त्यज्यते। यथा वैयाकरणैराख्यातस्य कर्तरि शक्तिरुच्यते। चैत्रः पचतीत्यादौ कर्त्रा सह चैत्रस्याभेदान्वयः। तच्च गौरवात्त्यज्यते। किन्तु कृतौ शक्तिग्रहः, लाघवात्। कृतिश्चैत्रादौ प्रकारीभूय भासते।

❀ प्रभा ❀

पञ्चम्यास्तसिल्, व्याकरणादिभ्य इत्यर्थः। व्याकरणात्, उपमानात्, कोशात्, आप्तवाक्यात्, व्यवहारात्, वाक्यशेषात्, विवृतेः, सिद्धपदस्य सान्निध्यात् च वृद्धाः शक्तिग्रहं वदन्ति इति स्पष्टार्थः। प्रथममाह धात्विति। आदिना समासादिपरिग्रहः, समासेऽपि वैयाकरणैः शक्तिस्वीकारात् 'समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत्' इति। प्रकृतिपदम् प्रातिपदिकार्थकम्। प्रत्ययाः=विभक्ति-तद्धित-आख्यात-कृतः। क्वचित्=स्थलविशेषे। आख्यातस्य=पचति इत्यत्र तिपः। पचति इत्यस्य पाककर्त्ता इति। कर्त्रा सहाभेदसम्बन्धेन अन्वये तु चैत्राभिन्नः पाककर्त्तेति स्थूलार्थः। गौरवादिति। शक्यः कर्त्ता (कृतिमान्) शक्यता कर्तृनिष्ठा, शक्यतावच्छेदकं कर्तृत्वम् (कृतिमत्त्वम्) प्रकृतिजन्यबोधे प्रकारीभूतो भाव इति दिशा कृतिः, साच नानेति गौरवम्। लाघवादिति। किञ्चिदविशेषितस्य सकलकृतिनिष्ठस्य एकस्य कृतित्वस्य शक्यतावच्छेदकत्वे लाघवम्।

❀ सरस्वती ❀

वृद्ध लोग कहते हैं कि व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष, विवरण तथा सिद्धपद के सन्निधान से शक्तिज्ञान होता है।

धातु, प्रकृति, प्रत्यय, आदि का शक्तिज्ञान व्याकरण से होता है, कहीं पर बाधक आ जाने से उसे छोड़ भी दिया जाता है। जैसे—वैयाकरण आख्यात की कर्त्ता में शक्ति मानते हैं, अत एव 'चैत्रः पचति' यहाँ पर कर्तृपदार्थ का कर्त्ता के साथ अभेदसम्बन्ध से अन्वय होता है। उसमें गौरव होगा अतः छोड़ दिया जाता है, उसके बदले लाघवात् कृति में शक्ति मानते हैं, कृति का

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

न च कर्तुरनभिधानाच्चैत्रादिपदानन्तरं तृतीया स्यादिति वाच्यम्, कर्तृसंख्यानभिधानस्य तत्र तन्त्रत्वात् ।

❀ प्रभा ❀

यस्मिन्नर्थे प्रत्ययः क्रियते सः अभिहितः (उक्तः) यत्रार्थे च प्रत्ययो न क्रियते सोऽनभिहितः, अनभिहिते कर्मणि द्वितीया, अनभिहिते च कर्त्तरि तृतीया विभक्तिः, अभिहिते कर्मणि कर्त्तरि च प्रथमाविभक्तिरिति सिद्धान्तः । अत्रेद-मनुसन्धेयम्, धातुर्द्विविधः सकर्मकः अकर्मकश्च । तत्र सकर्मकात् कर्मणि कर्त्तरि च प्रत्यया भवन्ति । यदा च सकर्मकात् गमादिधातोः कर्त्तरि प्रत्ययः (लट्-लिट्-प्रभृतिः) तदा कर्त्तुरभिहितत्वात् ततः प्रथमा, कर्मणश्च तदानीमनभिहितत्वात् ततो द्वितीया यथा देवदत्तो ग्रामं गच्छति । यदा च सकर्मकात् कर्मणि प्रत्ययः तदा कर्मणः अभिहितत्वात् ततः प्रथमा, कर्त्तुश्च तदानीमनुक्तत्वात् ततः तृतीया, यथा देवदत्तेन ग्रामः गम्यते ।. एवम् अकर्मकाद् धातोः कर्त्तरि भावे च प्रत्ययाः भवन्ति । यदा कर्त्तरि प्रत्ययः तदा कर्तुः अभिहितत्वात् ततः प्रथमा, यथा देवदत्तो भवति । यदा च भावे प्रत्ययः तदा कर्त्तुः अनभिहितत्वात् ततः तृतीया, यथा देवदत्तेन भूयते इति ।

एतादृशीम् प्रक्रियाम् मनसि निधाय प्रकृते 'चैत्रः पचति' इत्यत्र लाघवात् आख्यातस्य कृतौ शक्तिस्वीकारे कर्त्तुः अनभिहितत्वात् ततः तृतीयया भाव्य-मित्याशङ्कते नचेति । उत्तरयति कर्तृसङ्ख्येति । कर्तृवृत्तिर्या संख्या तस्या अन-भिधानं यत्र तत्र 'अनभिहिते' इत्यधिकृत्य 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' इति पाणिनीय-शास्त्रप्रवृत्तिः । तत्र = तृतीयायाम् । तन्त्रत्वात् = प्रयोजकत्वात् ।

❀ सरस्वती ❀

भी चैत्र में अन्वय प्रकाररूप से होता है ।

प्रश्न—ऐसी स्थिति में जब कि कर्ता में प्रत्यय न होगा तब तो वह अन-भिहित (अनुक्त) हो जायगा तब तो चैत्रपद से तृतीया होने लगेगी ?

उत्तर—कर्ता में रहनेवाली जो संख्या वह जब अनभिहित होती है तभी तृतीया विभक्ति होती है, अन्यथा नहीं ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

संख्याभिधानयोग्यश्च कर्मत्वाद्यनवरुद्धः प्रथमान्तपदोपस्थाप्यः। कर्मत्वादीत्यस्येतरविशेषणत्वतात्पर्याविषयत्वमर्थः, तेन चैत्र इव मैत्रो गच्छतीत्यादौ न चैत्रे संख्यान्वयः। यत्र कर्मादौ न विशेषणत्वे तात्पर्य तद्वारणाय प्रथमान्तेति।

यद्वा धात्वर्थातिरिक्ताविशेषणत्वं प्रथमदलार्थः। तेन चैत्र इव मैत्रो

❀ प्रभा ❀

ननु कर्तृसंख्याभिधाने एव किम् प्रयोजकमित्याह संख्याभिधानेति। चैत्रः पचति तण्डुल इत्यादौ कर्मत्वादिलाक्षणिकप्रथमान्तपदोपस्थाप्यतण्डुलादिवारणाय कर्मत्वाद्यनवरुद्ध इति। ननु चैत्र इव मैत्रो गच्छति इत्यत्र आख्यातेन एकवचनत्वरूपेण उक्तायाः संख्यायाः चैत्रेऽन्वयः स्यात् कर्मत्वाद्यनवरुद्धत्वात् प्रथमान्तपदोपस्थाप्यत्वाच्चेति। एवम् पक्वम् अन्नम् भुज्यते इत्यादौ अन्नादौ संख्यान्वयानुपपत्तिः, पाककर्मत्वस्य अन्नेऽन्वयेन कर्मत्वाद्यनवरुद्धत्वाभावात् अत आह कर्मत्वादीत्यस्येति। कर्मत्वपदम् इतरपरम्, अनवरुद्धत्वं च विशेषणतया अविवक्षितम्, फलितार्थं तमाह इतरविशेषणत्वतात्पर्याविषयेति। फलमाह तेनेति। प्रथमान्तपदोपस्थाप्यपदस्य फलं दित्सुराह यत्रेति। विशेषणत्वे इत्यस्य विशेषणत्वमात्रे इत्यर्थः। तथा च तण्डुलम् पचति इत्यादौ यदा विशेषणत्वमुख्यविशेष्यत्वाभ्यां तण्डुलबोधे तात्पर्यं तदा तण्डुले संख्यान्वयवारणाय प्रथमान्तेत्यादीति। रूपान्तरेण फलं विवक्षुराह यद्वेति। धात्वर्थादतिरिक्तस्य अविशेषणत्वमित्यस्य धात्वर्थमात्रविशेषणत्वं सुतराम्। फलमाह तेनेति। इवार्थः

❀ सरस्वती ❀

संख्या के अभिधान के योग्य कर्मत्व आदि से अनवरुद्ध तथा प्रथमान्तपद से उपस्थाप्य ही होता है। कर्मत्वादि इस विशेषण का अर्थ है इतरविशेषणत्वतात्पर्य का अविषय होना। अतः 'चैत्र जैसा मैत्र जाता है' इत्यादि स्थल में चैत्र में संख्या का अन्वय नहीं होता। जहाँ पर कर्म आदि में विशेषणत्व तात्पर्य नहीं उसके निवारण के लिये प्रथमान्त यह दल दिया गया है।

अथवा धात्वर्थ से अतिरिक्त का अविशेषण हो यह प्रथम दल का अर्थ है।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

गच्छतीत्यत्र चैत्रादेर्वारणम् । स्तोकं पचतीत्यादौ स्तोकादेर्वारणाय च द्वितीयदलम् । तस्य द्वितीयान्तपदोपस्थाप्यत्वाद्वारणमिति ।

मीमांसकमतम् एवं व्यापारेऽपि न शक्तिर्गौरवात् । रथो गच्छतीत्यादौ तु व्यापारे आश्रयत्वे वा लक्षणा । जानातीत्यादौ आश्रयत्वे, नश्यतीत्यादौ प्रतियोगित्वे निरूढलक्षणा ।

उपमानाद्यथा शक्तिग्रहस्तथोक्तम् ।

❁ प्रभा ❁

सादृश्यम्, तथा च चैत्रप्रतियोगिकसादृश्यानुयोगी मैत्रः । तत्र धात्वर्थातिरिक्तं सादृश्यम् तद्विशेषणतया चैत्रादेर्वारणम् । द्वितीयदलस्य प्रथमान्तेत्यस्य फलमाह स्तोकमिति । प्रथमान्तपदोपस्थाप्यत्वाभावात् स्तोकादेर्वारणमिति ।

मीमांसकस्य 'व्यापारो धात्वर्थः' इति मतं चिखण्डयिषुराह एवमिति । तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकस्यैव व्यापारपदार्थत्वात् कृतित्वजात्यपेक्षया गुरुत्वादिति भावः ।

ननु पूर्वोक्तदिशा आख्यातस्य यत्नार्थकता (यत्नः कृतिः) न सम्भवति, तथात्वे रथो गच्छतीत्यत्र अचेतने तदसम्भवाद् व्यभिचारः स्यादत आह रथ इति । प्रकृते उत्तरदेशसंयोगानुकूलक्रिया गम्धात्वर्थः, तदाश्रयत्वमेव प्रतीयते नतु तादृशक्रियानुकूलाश्वादिसंयुक्तरज्ज्वादिसंयोगवत्त्वमिति नव्यमतमाह आश्रयत्वे वेति । जानाति इत्यत्र ज्ञानाश्रयत्वमात्रम् प्रतीयते नतु ज्ञानानुकूला कृतिः ।

उपमानस्य शक्तिग्राहकत्वं स्मारयति तथोक्तिमिति । कोशात् शक्तिग्रहं

❁ सरस्वती ❁

उससे पूर्वोक्तस्थल में चैत्र आदि का वारण हो जायगा । स्तोकम् इत्यादि द्वितीयस्थल में दोषनिवारण के लिये द्वितीय 'प्रथमान्त' यह दल है ।

इसी प्रकार व्यापार में भी शक्ति मानने से गौरव होता है, अतः वह भी मान्य नहीं, 'रथ जाता है' इत्यादि स्थल में व्यापार में अथवा आश्रयता में लक्षणा से कार्य हो जायगा । 'जानाति' इस स्थल में आश्रयत्व में तथा 'नश्यति' इत्यादिस्थल में प्रतियोगित्व में निरूढलक्षणा हो जाती है ।

उपयमान से शक्तिग्रह का प्रकार बतला चुके हैं ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

एवं कोशादपि शक्तिग्रहः। सति बाधके क्वचित्त्यज्यते। यथा नीलादिपदानां नीलरूपादौ नीलादिविशिष्टे च शक्तिः कोशेन व्युत्पादिता तथापि लाघवान्नीलादावेव शक्तिः। नीलादिविशिष्टे तु लक्षणेति।

एवमाप्तवाक्यादपि। यथा 'कोकिलः पिकपदवाच्य' इत्यादिशब्दात्पिकादिपदानां कोकिले शक्तिग्रहः।

एवं व्यवहारादपि। यथा प्रयोजकवृद्धेन घटमानयेत्युक्तम्, तच्छ्रुत्वा

❀ प्रभा ❀

विवक्षुराह एवमिति। गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति इत्यमरसिंहरचितनामलिङ्गानुशासनस्य उभयत्र शक्तिग्राहकत्वात्। लाघवात् क्वचिदन्यथापीति स्पष्टयति सति बाधक इति। नीलादिमत्त्वापेक्षया नीलत्वादिजातेर्लघुतया शक्यतावच्छेदकत्वात्। नीलादिविशिष्टबोधः कथमित्यत आह लक्षणेति। शाब्दिकास्तु यः शिष्यते स लुप्यमानार्थाभिधायी इति सिद्धान्तात् नीलमस्त्यस्मिन्निति व्युत्पत्त्या नीलशब्दात् मतुप्प्रत्ययस्य 'गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्ट' इति वार्त्तिकेन लुकि अवशिष्टेन विशिष्टार्थबोधसम्भवे नात्र लक्षणायाः प्रयोजनमिति वदन्ति।

आप्तः शिष्टो यथार्थवक्ता, तस्य वाक्यादपि शक्तिग्रहमाह एवमिति। व्यवहारादपि तमाह एवमिति।

❀ सरस्वती ❀

इसी प्रकार कोश से भी शक्तिज्ञान होता है। बाधक उपस्थित होने पर कहीं कहीं वह छोड़ भी दिया जाता है। जैसे नील आदि पदों की नील रूप में तथा नील आदि से विशिष्ट द्रव्य में कोशद्वारा शक्ति निर्णीत है, तथापि लाघव देखकर केवल नील आदि में ही शक्ति मान ली जाती है, नील आदि से विशिष्ट द्रव्य में तो लक्षणा कर ली जाती है।

इसी प्रकार आप्तवाक्य से भी शक्तिज्ञान होता है। जैसे 'कोकिल का नाम पिक है' इस वाक्य से पिक आदि पदों का शक्तिज्ञान कोकिल आदि में होता है।

इसी तरह व्यवहार से भी शक्तिज्ञान होता है। जैसे प्रयोजक (प्रेरक अथवा

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

प्रयोज्यवृद्धेन घट आनीतः, तदवधार्य पार्श्वस्थो बालो घटानयनरूपं कार्यं घटमानयेतिशब्दप्रयोज्यमित्यवधारयति। ततश्च घटं नय गामानयेत्यादिवाक्यादावापोद्वापाभ्यां घटादिपदानां कार्यान्वितघटादौ शक्तिं गृह्णाति। इत्थं च भूतले नीलो घट इत्यादिवाक्यान्न शाब्दबोधः। घटादिपदानां कार्यान्वितघटादिबोधे सामर्थ्यावधारणात् कार्यताबोधं प्रति च लिङादीनां सामर्थ्यात्तदभावान्न शाब्दबोध इति केचित्।

तन्न, प्रथमतः कार्यान्वितघटादौ शक्त्यवधारणेऽपि लाघवेन पश्चात्तस्य परित्यागौचित्यात्। अत एव 'चैत्र पुत्रस्ते जातः, कन्या ते गर्भिणी

❀ प्रभा ❀

आवापोद्वापाभ्यामिति। नयनानयने ताविति अन्वयव्यतिरेकाभ्यामिति भावः।

अन्विताभिधानवादिमीमांसकमतं दूषयितुमुपन्यस्यति कार्यान्वितघटादीति। अन्वितो घटो घटपदशक्यः, घटादिपदानां कार्यान्वितघटादौ शक्तिरिति तदभिप्रायः। दूषयति तन्नेति। कार्यत्वान्वितघटशाब्दत्वापेक्षया घटशाब्दत्वस्य कार्यतावच्छेदकत्वे लाघवं स्पष्टयति लाघवेनेति। अत एव = कार्यत्वाविषयकबोधम्

❀ सरस्वती ❀

प्रयोक्ता) वृद्ध ने 'घट ले आओ' ऐसा कहा, उसे सुनकर प्रयोज्य वृद्ध (जिसको आज्ञा दी गई) ने घट ला दिया। इसे देखकर पास का बालक घट ले आना रूप जो कार्य वह 'घटमानय' इस शब्द से प्रयोज्य है ऐसा निश्चय ज्ञात करता है, तदनन्तर 'घट ले जाओ, गाय ले आओ' इत्यादि वाक्य से आवाप उद्वाप द्वारा घट आदि पदों की कार्यान्वित घट आदि में शक्ति मानता है। इस प्रकार 'भूतल में नीलघट' इत्यादि वाक्य से शाब्दबोध नहीं होता। क्योंकि घटादिपदों की कार्यान्वितघट आदि में शक्ति मान लेने पर कार्यताबोध के प्रति लिङ् आदि की शक्ति की आवश्यकता होने से प्रकृत में उसके अलाभ से शाब्दबोध न होना ठीक ही है। ऐसा किसी का मत है।

वह ठीक नहीं, प्रथमतः कार्यान्वितघट में शक्ति का ज्ञान करने पर भी लाघव के बल से बाद में वह छोड़ भी दिया जाता है। इसी लिये 'चैत्र तुम्हारे पुत्र

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

जाता' इत्यादौ मुखप्रसादमुखमालिन्याभ्यां सुखदुःखे अनुमाय तत्कारणत्वेन परिशेषाच्छाब्दबोधं निर्णीय तद्धेतुतया तं शब्दमवधारयति । तथाच व्यभिचारात्कार्यान्विते न शक्तिः । न च तत्र तं पश्येत्यादि शब्दान्तरमध्याहार्यं, मानाभावात् । चैत्र ! पुत्रस्ते जातो मृतश्चेत्यादौ तदभावाच्च । इत्थञ्च लाघवादन्वितघटेऽपि शक्तिं त्यक्त्वा घटपदस्य घटमात्रे शक्तिमवधारयति ।

एवं वाक्यशेषादपि शक्तिग्रहः । यथा यवमयश्चरुर्भवतीत्यत्र यवपदस्य दीर्घशूकविशेषे आर्याणां प्रयोगः कङ्गौ च म्लेच्छानाम् । तत्र हि 'यदान्या ओषधयो म्लायन्तेऽथैते मोदमानास्तिष्ठन्ति ।'

❀ प्रभा ❀

प्रति पदानां हेतुत्वादेव । अनुमायेति । अनुमानाकारस्तु मुखप्रसादहेतुना मुखमालिन्यहेतुना च कल्पनीयः । तत्कारणत्वेन = सुखदुःखयोः कारणत्वेन । स्वमतेन निष्कर्षमाह इत्थञ्चेति । अन्वितघटे शक्तिकल्पनापेक्षया घटमात्रे तत्कल्पने लाघवादित्यर्थः । ननु यवपदस्य वाक्यशेषाद् दीर्घशूके शक्तिरास्तां कङ्गावपि शक्तिसत्त्वे

❀ सरस्वती ❀

हुआ—तुम्हारी कन्या गर्भिणी हो गई' इत्यादिस्थल में मुख की प्रसन्नता एवम् मलिनता से क्रमशः सुख दुःख का अनुमान कर इस कृत्य के प्रति उस शब्द को ही कारण मान लेता है । अतः व्यभिचार हो जाने से कार्यान्वितघट आदि में शक्ति मानना उचित नहीं । यदि कहिये कि वहाँ पर 'उसे देखो, इत्यादि शब्दान्तर का अध्याहार कर लेना चाहिये तो यह प्रमाणाभाव के कारण उचित नहीं । पूर्वोक्तस्थल में उसका अभाव भी स्पष्ट ही है ।

इस प्रकार लाघव से अन्वितघट में भी शक्ति न मानकर घटपद की घटमात्र में शक्ति निश्चित की जाती है ।

इसी प्रकार वाक्यशेष से भी शक्तिज्ञान होता है । जैसे 'यवमय चरु होता है' इस स्थल में लम्बी टूँडवाले को आर्य लोग यव कहते हैं, तथा कांगुन को म्लेच्छ लोग । वहाँ पर 'जिस समय अन्य ओषधियाँ म्लान हो जाती हैं उस समय ये

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वसन्ते सर्वसस्यानां जायते पत्रशातनम्।
मोदमानाश्च तिष्ठन्ति यवाः कणिशशालिनः॥

इति वाक्यशेषाद्दीर्घशूके शक्तिर्निर्णीयते, कङ्गौ तु शक्तिभ्रमात्प्रयोगः, नानाशक्तिकल्पने गौरवात्। हर्यादिपदे तु विनिगमकाभावान्नानाशक्तिकल्पनम्।

एवं विवरणादपि शक्तिग्रहः। विवरणं तु तत्समानार्थकपदान्तरेण तदर्थकथनम्। यथा घटोऽस्तीत्यस्य कलशोऽस्तीत्यनेन विवरणाद्घटपदस्य कलशे शक्तिग्रहः। एवं पचतीत्यस्य पाकं करोतीत्यनेन विवरणादाख्यातस्य यत्नार्थकत्वं कल्प्यते।

❀ प्रभा ❀

बाधकाभाव इत्यत आह नानाशक्तीति। कथं हर्यादिपदे नानाशक्तिरित्यत आह हर्यादिपदे त्विति। विनिगमकाभावादिति। तत्र कोशस्योभयत्र तुल्यत्वात्, प्रकृते च वाक्यशेषस्यैव विनिगमकत्वादिति भावः।

विवरणात् शक्तिग्रहमाह एवमिति। आख्यातस्य यत्नार्थकत्वमिति। न च विवरणस्य कथं शक्तिग्राहकत्वम् तद्वाचकपदाभावादिति वाच्यम्, आख्यातं

❀ सरस्वती ❀

प्रसन्न दिखलाई देते हैं' वसन्त में सभी सस्यों के पत्ते गिर जाते हैं परन्तु यव प्रसन्न रहता है, इस वाक्यशेषसे दीर्घशूक ही यवशब्दसे लिया गया, उसी में शक्ति मानी गई। रही बात कांगुन की सो तो शक्तिभ्रमवश वैसा प्रयोग होता है। क्योंकि नानाशक्ति मानने में गौरव हो जायगा। हरि इत्यादि पदों में नानाशक्ति तो विनिगमना के अभाव से मानी जाती है।

इसी प्रकार विवरण से भी शक्तिज्ञान होता है। उसके समानअर्थ वाले दूसरे पद से उस अर्थ के कहने को विवरण कहते हैं। जैसे 'घट है' इसके लिये 'कलश है' इस विवरण से घटपद की कलश में शक्ति ज्ञात हुई। इसी प्रकार 'पचति' के 'पाक करता है' इस विवरण से आख्यात को यत्नार्थक मान लिया जाता है।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

एवं प्रसिद्धपदस्य सान्निध्यादपि शक्तिग्रहः। यथा इह सहकारतरौ मधुरं पिको रौतीत्यादौ पिकपदस्य कोकिले शक्तिग्रह इति।

तत्र जातावेव शक्तिर्न तु व्यक्तौ, व्यभिचारादानन्त्याच्च। व्यक्तिं विना जातिभानस्यासम्भवाद्व्यक्तेरपि भानमिति केचित्।

❀ प्रभा ❀

यत्तत्वविशिष्टे शक्तम्, यत्तत्वविशिष्टशक्तकरोति—प्रतिपादितार्थप्रतिपादकत्वात् इत्यनुमानेन तस्य शक्तिग्राहकत्वात्।

प्रसिद्धस्य प्रसिद्धार्थकस्य पदस्य सान्निध्यात् सन्निधानात् शक्तिग्रहमाह एवमिति। नच तिङर्थधर्मिणि नामार्थान्वयोऽव्युत्पन्न इति नियमेन नेदं शक्तिग्रहस्योदाहरणम् भवितुमर्हतीति वाच्यम्, तस्य नियमस्याप्रामाणिकत्वात्। अत एव 'यो यः शूद्रस्य पचति द्विजोऽन्नं सोऽतिनिन्दित' इत्यादौ तिङर्थधर्मिणि तथा अन्वयो दृश्यते।

शक्तिग्राहकोपायान् निरूप्य कुत्र शक्तिरितिप्रसङ्गात् परमतनिराचिकीर्षया स्वमतव्यवतिष्ठापयिषयां चाह तत्रेति। जातावेव = जातिमात्रे, न व्यक्तावपीति। नागृहीतविशेषणा बुद्धिर्विशेष्यमुपसंक्रामतीति नियमेन जातिविशिष्टे शक्तिस्वीकारे विशेषणे जातावपि शक्तिग्रहस्यावश्यकत्वात् जातावेवेति। घटत्वविशिष्टनानाघटेषु शक्तिकल्पनामपेक्ष्य शुद्धघटत्वे शक्तिकल्पने लाघवादिति यावत्। व्यक्तिशक्तिवादे दोषमाह व्यभिचारादिति। तत्र पक्षे यस्यां कस्यांचित् व्यक्तौ शक्तिराहोस्वित् सर्वासु व्यक्तिषु? आद्ये अगृहीतशक्तिकव्यक्तावपि शाब्दबोधोदयेन तत्र शक्तिज्ञानाभावाद् व्यभिचारः स्फुटः। द्वितीय आह आनन्त्यादिति। व्यक्तिभेदेन शक्तिभेदात् शक्त्यानन्त्यमित्यर्थः। केचिदिति। जातेः केवलाया आश्रयहीनायाः

❀ सरस्वती ❀

इसी प्रकार प्रसिद्धपद के सन्निधान से भी शक्तिग्रह होता है। जैसे 'पिक इस आम के पेड़ पर मधुरशब्द कर रहा है' इत्यादि स्थल में पिकपद का कोकिल में शक्तिज्ञान। वहाँ भी जाति में ही शक्ति माननी चाहिये न कि व्यक्ति में, क्योंकि व्यक्ति के नाना होने से व्यभिचार तथा अनन्त शक्तियों का स्वीकार करना होगा। व्यक्ति के बिना जातिभान नहीं हो सकता, अतः उसका भी भान होता है ऐसा

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

तन्न, शक्तिं विना व्यक्तिभानानुपपत्तेः। न च व्यक्तौ लक्षणा, अनुपपत्तिप्रतिसन्धानं विनापि व्यक्तिबोधात्। न च व्यक्तिशक्तावानन्त्यम्, सकलव्यक्तावेकस्या एव शक्तेः स्वीकारात्। न चाननुगमः, गोत्वादेरेवानुगमकत्वात्।

❀ प्रभा ❀

व्यक्तिभानाभावे भानासम्भवा (तुल्यसाम्रीभास्यत्वादुभयोः) द् व्यक्तिभानम् अपीति भावः। खण्डयति तन्नेति। तद्विषयकशाब्दबोधम् प्रति तद्विषयकपदजन्यपदार्थोपस्थितेर्हेतुतया जातिपदयोरेव सम्बन्धग्रहे पदरूपैकसम्बन्धिज्ञानात् जातिरूपसम्बन्ध्यन्तरस्यैव स्मरणम् भवति नतु व्यक्तेरिति पदजन्यव्यक्त्युपस्थितेरभावेन व्यक्तिशाब्दबोधासम्भवेन व्यक्तौ शक्तिस्वीकारस्य परमावश्यकत्वादिति भावः। व्यक्तौ शक्त्या तत्त्वाभावेऽपि वृत्त्या पदजन्यपदार्थोपस्थितिं व्यवस्थापयति लक्षणेति। शक्तिलक्षणयोर्द्वयोरपि वृत्तित्वादिति भावः। दूषयति अनुपपत्तीति। गामानयेत्यादौ गोत्वजातेः आनयनान्वयानुपपत्त्या गोपदस्य गवि लक्षणाऽऽस्ताम्, परं गौरस्ति इत्यादौ गोत्वजातेः अस्तित्वाद्यन्वयानुपपत्तेरभावेन (अन्वयानुपपत्तिरूपलक्षणाबीजाभावेन) लक्षणायाः स्वीकर्त्तुमशक्यत्वादिति भावः।

स्वमते पूर्वोक्तदोषम् परिहरति नचेति। ईश्वरेच्छारूपायाः=शक्तेरेकत्वात् सकलव्यक्तौ तत्स्वीकारे न कोऽपि दोषः। अनुगमकत्वादिति। तथा च गोत्वावच्छिन्नविषयकशाब्दबोधे गोत्वविशिष्टविषयकशक्तिज्ञानत्वेन हेतुतेति न दोषः।

ननु शाब्दबोधे संसर्गज्ञानस्य सर्वाभिमतत्वेन कथम् पदजन्यपदार्थोपस्थितिर्हेतु-

❀ सरस्वती ❀

किसी का मत है। यह मत ठीक नहीं, क्योंकि शक्ति के बिना व्यक्ति का भान नहीं हो सकता। व्यक्ति में लक्षणा कर लें यह भी सम्भव नहीं, क्योंकि अनुपपत्तिज्ञान न रहने पर भी व्यक्ति का बोध अनुभव सिद्ध है, लक्षणा तो बिना अनुपपत्ति के कभी न होगी। व्यक्ति में शक्ति मानने पर 'शक्तियाँ अनन्त होंगी' यह दोष भी नहीं, क्योंकि सम्पूर्णव्यक्तियों में एकही शक्ति मान ली जायगी। अनुगम न बन सकेगा सो भी बात नहीं, गोत्व आदि जाति ही अनुगम करा देगी।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

किञ्च गौः शक्येति शक्तिग्रहो यदि तदा व्यक्तौ शक्तिः। यदि तु गोत्वं शक्यमिति शक्तिग्रहस्तदा गोत्वप्रकारकपदार्थस्मरणं शाब्दबोधश्च न स्यात्, समानप्रकारकत्वेन शक्तिज्ञानस्य पदार्थस्मरणं शाब्दबोधं प्रति च हेतुत्वात्। किञ्च गोत्वे यदि शक्तिस्तदा गोत्वत्वं शक्यतावच्छेदकं वाच्यम्, गोत्वत्वं तु गवेतरासमवेतत्वे सति सकलगोसमवेतत्वम्, तथाच गोव्यक्तीनां शक्यतावच्छेदकेऽनुप्रवेशात्तवैव गौरवम्। तस्मात्तत्तज्जात्याकृतिविशिष्टतत्तद्व्यक्तिबोधानुपपत्त्या कल्प्यमाना शक्तिर्जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ विश्राम्यतीति।

❀ प्रभा ❀

रिति नियम इत्यत आह किञ्चेति। हेतुमाह समानेति। शक्तिग्रहे यदंशे गोत्वादिप्रकारकत्वं शाब्दबोधस्यापि तदंशे गोत्वादिप्रकारकत्वमिति समानप्रकारकत्वार्थः।

ननु कार्यत्वप्रभृत्युपाधिप्रकारकशाब्दबोधस्थले तादृशसमानप्रकारकत्वस्य तदनुमतत्वेऽपि जातिप्रकारकशाब्दबोधस्थले तादृशसमानप्रकारकत्वं न तदिष्टमित्यत आह द्वितीयं किञ्चेति। उपसंहरति तस्मादिति। जात्याकृतिव्यक्तिषु त्रिषु एकैव

❀ सरस्वती ❀

और भी 'गौ शक्य है, ऐसा शक्तिग्रह होने पर व्यक्ति में शक्ति मानी जाय, यदि 'गोत्व शक्य है' ऐसा शक्तिग्रह होगा तो गोत्वप्रकारक पदार्थस्मरण तथा शाब्दबोध नहीं होगा, क्योंकि पदार्थस्मरण तथा शाब्दबोध दोनों ही के प्रति समानप्रकारक शक्तिज्ञान को कारण माना गया है।

और भी यदि गोत्व में शक्ति मानी जाय तो गोत्वत्व को शक्यतावच्छेदक कहना पड़ेगा, गोत्वत्व भी गो से अन्य में समवायसम्बन्ध से न रहता हुआ सकलगो में समवायेन रहनेवाला ही धर्म होगा, इस प्रकार शक्यतावच्छेदक में सकल गोव्यक्तियों का प्रवेश हो जाने से गौरव हो जायगा।

अतः तत्तत्जातिआकृति से विशिष्ट तत्तद्व्यक्तिबोध की अनुपपत्ति होने से कल्पित की जानेवाली शक्ति जाति आकृति से विशिष्टव्यक्ति में ही मान ली जानी चाहिये।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

शक्तं पदम्, तच्चतुर्विधम्--क्वचिद्यौगिकं, क्वचिद्रूढं, क्वचिद्योगरूढं, क्वचिद्यौगिकरूढम्, तथाहि--

यत्रावयवार्थ एव बुध्यते तद्यौगिकम्, यथा पाचकादिपदम्।

यत्रावयवशक्तिनैरपेक्ष्येण समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्रूढम्, यथा गोमण्डलादिपदम्।

यत्र तु अवयवशक्तिविषये समुदायशक्तिरप्यस्ति तद्योगरूढम्, यथा पङ्कजादिपदम्। तथाहि--पङ्कजपदमवयवशक्त्या पङ्कजनिकर्तृरूपमर्थं बोधयति, समुदायशक्त्या च पद्मत्वेन रूपेण पद्मं बोधयति। न च केवलयाऽवयवशक्त्या कुमुदे प्रयोगः स्यादिति वाच्यम्, रूढिज्ञानस्य केवल-

❀ प्रभा ❀

शक्तिरिति (बोधनाय न्यायदर्शने 'जात्याकृतिव्यक्तयः पदार्थः' इत्येकवचनम् पदार्थशब्दात् इति।

पदं लक्षयति शक्तमिति। सर्वत्र क्वचित्पदं किञ्चिदर्थकम्। सविवरणमुदाहरति तथाहीति।

❀ सरस्वती ❀

शक्त को पद कहते हैं, वह चार प्रकार का १ यौगिक २ रुढ ३ योगरूढ ४ यौगिकरूढ। जहाँ पर केवल अवयवों के अर्थ की ही प्रतीति हो उसे यौगिक कहते हैं, जैसे—पाचक इत्यादि पद।

जहाँ पर अवयवशक्ति की अपेक्षा न कर केवल समुदायशक्ति से ही बोध होता है वह रूढ कहा जाता है, जैसे गो, मण्डल आदि शब्द।

जहाँ पर अवयवशक्ति के विषय में समुदायशक्ति भी है वह योगरूढ है, जैसे पङ्कज आदि पद। क्योंकि पङ्कजपद अवयवशक्ति से पङ्कजनिकर्तृरूप अर्थ का बोध कराता है, समुदायशक्ति से पद्मत्वेन रूपेण पद्म का बोधक होता है। केवल अवयवशक्ति से कुमुद में प्रयोग नहीं होता, क्योंकि रूढिज्ञान केवलयौगिक

मणिमालायाः २९। संख्यको मणिः (न्यायविभागे १२)

॥ श्रीः ॥

नैयायिकश्रीविश्वनाथपञ्चाननरचितकारिकावलीसहित-

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः

शब्दखण्डम्

विविधराजकीयसंस्कृतपरीक्षासु आचार्यकक्षायां निर्धारितम्

प्रभा-सरस्वतीसंस्कृत-हिन्दीभाष्यसहितम्



परिष्कर्त्ता—

श्रीराजनारायणशास्त्री शुक्लः

प्रधानाचार्यः

राजसम्बद्ध-शास्त्रार्थमहाविद्यालय, काशी

मूल्यम् ॥=)

नैयायिकश्रीविश्वनाथपञ्चाननिर्मितकारिकावलीसहित—

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः

शब्दखण्डम्

…शीस्थ-राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालये कृतन्यायशास्त्राध्यापनेन, शास्त्रार्थ-
…व्याख्यानवाचस्पतिना, राजसम्बद्धसंस्कृतादर्शशास्त्रार्थमहाविद्याल-
यप्रधानाचार्येण अष्टोत्तरशतग्रन्थप्रणेतृ-स्वर्गीयपण्डितराज-
श्रीवेणीमाधवशास्त्रिणां शास्त्रार्थजगत्प्रसिद्धानां
संस्कृताशुकविचक्रवर्त्तिनां तनूजेन सरयूपारी-
णशुक्लेन श्रीराजनारायणशास्त्रिणा
स्वरचितप्रभाख्यसंस्कृतभाष्येण
सरस्वत्याख्यराष्ट्रभाषानुवा-
देन च विभूष्य
सम्पादितम्।

तदिदम्
'संस्कृत-बुकडिपो' स्वामिभिः
मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स महोदयैः
प्रकाशितम्।

मूल्यम् ॥=)

सन् १९५४ ई०

…मं संस्करणम्

प्रकाशकः—
बी० एन० यादव,
अध्यक्ष, मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत बुकडिपो,
कचौड़ीगली, बनारस-१

मुद्रकः—
मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स,
बुलानाला, बनारस-१

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

सप्रश्नन्यायसिद्धान्तमुक्तावलीयुतायाः

कारिकावल्याः

शब्दखण्डम् ।

❀ कारिकावली ❀

पदज्ञानं तु करणं द्वारं तत्र पदार्थधीः ।
शाब्दबोधः फलं तत्र शक्तिधीः सहकारिणी ॥८१॥

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

शाब्दबोधप्रकारं दर्शयति पदज्ञानं त्विति । न तु ज्ञायमानं पदं करणं, पदाभावेऽपि मौनिश्लोकादौ शाब्दबोधात् ।

❀ प्रमा ❀

प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि इति न्यायदर्शनक्रमानुसारेण प्रत्यक्षानुमानोपमानानि तत्प्रमाश्च निरूप्येदानीम् अवशिष्टं शब्दप्रमाणन्तत्प्रमां (शाब्दबोधं) च निरूपयितुं शब्दखण्डमारभते पदज्ञानन्तु इत्यादिना ।

तत्र, पदज्ञानम्, तु, करणम्, पदार्थधीः, द्वारम्, तत्र, शक्तिधीः, सहकारिणी, फलम्, शाब्दबोध इति स्पष्टम् ।

पदज्ञानम् करणम् भवति, नतु वर्तमानकालिकज्ञानविषयीभूतम् पदम् । फलमाह पदाभाव इति । अयम्भावः, मौनिश्लोके पदं न भवति, पदाभावेऽपि

❀ सरस्वती ❀

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान प्रमाणों तथा उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रत्यक्ष, अनुमिति तथा उपमितियों का निरूपण करने के बाद क्रमप्राप्त शब्द-प्रमाण से उत्पन्न शाब्दबोध का निरूपण करते हैं । पदज्ञान करण, पदार्थज्ञान व्यापार, शाब्दबोध ही फल होता है, शक्तिज्ञान सहकारी कारण होता है ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

पदार्थधीरिति। पदजन्यपदार्थस्मरणं व्यापारः। अन्यथा पदज्ञानवतः प्रत्यक्षादिना पदार्थोपस्थितावपि शाब्दबोधापत्तेः।

तत्रापि वृत्त्या पदजन्यत्वं बोध्यम्। अन्यथा घटादिपदात्समवायसम्बन्धेनाऽऽकाशस्मरणे जाते आकाशस्यापि शाब्दबोधापत्तेः।

❀ प्रभा ❀

शाब्दबोध इष्ट इदानीम् ज्ञायमानपदस्य करणत्वे स न स्यादिति। पदज्ञानस्य तत्त्वे तु तत् मौनिनोऽपि वर्त्तत एव।

ननु सिद्धान्ततः करणत्वम् व्यापारवदसाधारणकारणस्यैव, पदज्ञानस्य करणत्वे व्यापारापेक्षा भवति, कश्च स इति शङ्कायामाह पदार्थधीरिति। द्वारम् = व्यापारः। तत्त्वं च तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकत्वम्। प्रकृते समन्वयश्च पदज्ञानजन्यः पदज्ञानजन्यशाब्दबोधजनकश्च पदार्थज्ञान (पदार्थस्मरण) रूपो व्यापारः।

ननु पदार्थस्मरणमात्रस्य व्यापारत्वे पदज्ञानवतः पुरुषस्य प्रत्यक्षादिना पदार्थोपस्थितौ (पदार्थस्मृतौ) शाब्दबोधापत्तिरिति चेदत्राह पदजन्येति। तथाच पदजन्यपदार्थस्मरणस्यैव शाब्दबोधजनकत्वेन प्रकृते पदार्थोपस्थितेः पदजन्यत्वाभावेन आपत्तिपरिहारात्।

ननु तथापि घटपदात् समवायेन आकाश (पदार्थ) स्मृतौ तस्यापि शाब्दबोधः प्रसज्ज्येतेति चेदत्राह वृत्त्येति। तथाच वृत्त्या पदजन्यपदार्थोपस्थितिर्व्यापार इत्यर्थे वृत्त्या शक्तिलक्षणान्यतराख्यया घटपदात् आकाशस्योपस्थितेरभावान्न तदापत्तिः।

❀ सरस्वती ❀

कारिका में पदविषयकज्ञान कहा गया है, वर्त्तमानकाल में ज्ञात होनेवाला पद नहीं, अन्यथा मौनी के श्लोक में जहाँ पर कि पद है ही नहीं, वहाँ शाब्दबोध न बन पायेगा।

पदार्थस्मरण ही नहीं अपितु पदजन्य पदार्थस्मरण को व्यापार कहना चाहिये, अन्यथा पदज्ञानवान् व्यक्ति को प्रत्यक्ष आदि से पदार्थोपस्थिति हो जाने पर भी शाब्दबोध होने लग जायगा।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

च्युते । यथा द्विरेफादिपदात् रेफद्वयसम्बन्धो भ्रमरपदे ज्ञायते, भ्रमरपदस्य च सम्बन्धो भ्रमरे ज्ञायते इति तत्र लक्षितलक्षणा ।

किन्तु लाक्षणिकं पदं नानुभावकम् । लाक्षणिकार्थस्य शाब्दबोधे तु पदान्तरं कारणम्--शक्तिलक्षणान्यतरसम्बन्धेनेतरपदार्थान्वितस्वशक्यार्थशाब्दबोधं प्रति पदानां सामर्थ्यावधारणात्

❀ प्रभा ❀

घटितपदवाच्यत्वादिरूपेतिभावः । नच द्वौ रेफौ यत्रेति व्युत्पत्त्या द्विरेफपदेन स्वशक्यरेफद्वयसम्बन्धिभ्रमरपदं लक्ष्यते, भ्रमरपदेन च शक्त्या भ्रमरः कल्प्यते इत्येतावतैव सामञ्जस्येऽलंद्विरेफपदस्य भ्रमरे परम्परासम्बन्धरूपलक्षणया । तथा चात्र लक्षितेन लक्षणेति तृतीयातत्पुरुषः लक्षितलक्षणाशब्दार्थः स्फुट इति वाच्यम्, तथासति द्विरेफमानयेत्यादितः कर्मत्वादौ भ्रमरपदार्थान्वयानुपपत्तेः, प्रत्ययानां प्रकृत्यर्थान्वितस्वार्थबोधकत्वनियमात् ।

ननु तच्छाब्दबोधे तच्छक्तपदज्ञानत्वेन हेतुत्वात् लाक्षणिकशाब्दबोधः कथं स्यादित्यत आह किन्त्विति । अनुभावकम् = शाब्दानुभवजनकम् । तथा च लाक्षणिके पदे स्मारिका शक्तिरेव, न आनुभविकी इति भावः । ननु तर्हि लाक्षणिकार्थस्य कथं शाब्दबोधे भानमित्याशङ्क्य लाक्षणिकपदसमभिव्याहृतशक्तपदान्तरमेव लाक्षणिकार्थान्वितस्वार्थशाब्दबोधम् प्रति कारणम् इति शक्तपदान्तरादेव शाब्दबोधे लाक्षणिकार्थस्यापि भानमिति समाधत्ते लाक्षणिकार्थस्येति । पदान्तरम् = समभिव्याहृतं शक्तम्पदम् । तथा च लाक्षणिकपदसमभिव्याहृतं शक्तम् पदं लाक्षणिकपदस्मारितलक्ष्यार्थविषयकशाब्दबोधजनकमिति हृदयम् । शक्तिलक्षणेति ।

❀ सरस्वती ❀

कहते हैं । जैसे—द्विरेफपद से दो रेफ का सम्बन्ध भ्रमरपद में ज्ञात होता है, भ्रमरपद का सम्बन्ध भ्रमर में, इस प्रकार लक्षितलक्षणा बनी ।

किन्तु लाक्षणिक पद अनुभावक नहीं होता । लाक्षणिक अर्थ के शाब्दबोध में दूसरा पद कारण होता है । शक्ति अथवा लक्षणा किसी एक सम्बन्ध से इतरपदार्थ में अन्वितस्वशक्यार्थबोध के प्रति पदों का सामर्थ्य माना जाता है ।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

वाक्ये तु शक्तेरभावाच्छक्यसम्बन्धरूपा लक्षणापि नास्ति। यत्र गभीरायां नद्यां घोष इत्युक्तं तत्र नदीपदस्य नदीतीरे लक्षणा। गभीरापदार्थस्य नद्या सहाभेदेनान्वयः, क्वचिदेकदेशान्वयस्यापि स्वीकृतत्वात्।

यदि तत्रैकदेशान्वयो न स्वीक्रियते तदा नदीपदस्य गभीरनदीतीरे लक्षणा, गभीरपदं तात्पर्यग्राहकम्।

❀ प्रभा ❀

अन्यतरसम्बन्धेन य इतरः पदार्थः (इतरपदजन्यस्मृतिविषयः) तदन्वितो यः स्वार्थ इति।

ननु शक्यसम्बन्धो लक्षणा, वाक्यस्य च शक्याप्रसिद्धया तत्र लक्षणा न स्यादिति मीमांसकाक्षेपम् इष्टापत्त्या समाधत्ते वाक्ये त्विति। ननु गभीरायां नद्यां घोष इत्यादौ नदीपदस्य नदीतीरे लक्षणास्वीकारे गभीरपदार्थस्यैकदेशान्वयापत्त्या पदलक्षणायाः असम्भवेन वाक्यलक्षणा आवश्यकतां भजते इत्यत आह यत्र गभीरेति। पदार्थः पदार्थेनान्वेति नतु पदार्थैकदेशेनेति व्युत्पत्तेरपवादमाह क्वचिदिति। चैत्रस्य गुरुकुलम्, देवदत्तस्य दासभार्येत्यादिनित्यसाकाङ्क्षपदार्थातिरिक्तस्थले एव तस्याः प्रसरादिति तात्पर्यम्। नदीपदस्येति। नच विनिगमकाभावेन गभीरपदस्य लक्षणा, नदीपदमस्तु तात्पर्यग्राहकमिति वाच्यम्, प्रत्ययानाम् प्रकृत्यर्थान्वितस्वार्थबोधकत्वव्युत्पत्त्या उत्तरपद एव लक्षणेति निर्वाहात्। मीमांसकशास्त्रार्थस्तु दिनकरीकृतां जिज्ञासुभिरतत एव द्रष्टव्यः। न स्वीक्रियत इति। नच घटशून्यम् इत्यत्र शून्यपदस्य अभाववदर्थकतया तदेकदेशेऽभावे एव घटत्वावच्छि-

❀ सरस्वती ❀

वाक्य में तो शक्ति के अभाव से शक्यसम्बन्धरूप लक्षणा भी नहीं है। जहाँ पर "गभीरायाम्..." ऐसा कहा गया वहाँ पर नदीपद की नदीतीर में लक्षणा, गभीरापदार्थ का नदी के साथ अभेदसम्बन्ध से अन्वय होता है, क्योंकि पदार्थ के एक देश का भी अन्वय कहीं कहीं माना जाता है।

यदि वहाँ पर एकदेश का अन्वय न मानें तो नदीपद की गभीरनदीतीर में लक्षणा, गभीरपद तात्पर्यग्राहक है ऐसा कहना चाहिये।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

बहुव्रीहावप्येवम्। तत्र हि चित्रगुपदादौ यदैकदेशान्वयः स्वीक्रियते तदा गोपदस्य गोस्वामिनि लक्षणा, गवि चित्राभेदान्वयः। यदि तत्रैकदेशान्वयो न स्वीक्रियते, तदा गोपदस्य चित्रगोस्वामिनि लक्षणा, चित्रपदं तात्पर्यग्राहकम्। एवमारूढवानरो वृक्ष इत्यत्र वानरपदस्य वानरारोहणकर्मणि लक्षणा, आरूढपदं तात्पर्यग्राहकम्। एवमन्यत्रापि बोध्यम्।

तत्पुरुषे तु पूर्वपदे लक्षणा। तथाहि—राजपुरुष इत्यादौ राजपदार्थेन पुरुषपदार्थस्य साक्षान्नान्वयो, निपातातिरिक्तनामार्थयोर्भेदेनान्वयबोधस्याव्युत्पन्नत्वात्। अन्यथा राजा पुरुष इत्यत्रापि तथान्वयबोधः स्यात्।

❀ प्रभा ❀

त्वप्रतियोगिताकत्वसम्बन्धेन घटपदार्थस्यान्वयः स्वीक्रियते इति वाच्यम्, पदार्थैकदेशे पदार्थान्तरस्य तादात्म्यसम्बन्धेनैव अन्वयास्वीकारो नतु भेदसम्बन्धेनापीति तात्पर्यात्।

निपातेति। ननु निपातमात्रार्थस्य नामार्थान्तरेण भेदान्वयस्वीकारे चन्द्र इव मुखम् इत्यत्र इवार्थे सादृश्ये चन्द्रस्य निरूपितत्वसम्बन्धेन अन्वयो न स्यात्, 'चादयोऽसत्त्वे' इति पाणिनीयानुशासने द्रव्यभिन्नार्थकानां चादीनामेव निपात-

❀ सरस्वती ❀

बहुव्रीहिसमास में भी ऐसे ही करना चाहिये, वहाँ पर चित्रगुपद आदि में जब एकदेशान्वय मानें तो गोपद की गोस्वामी में लक्षणा, गो में चित्रा का अभेदसम्बन्ध से अन्वय होगा। यदि एकदेशान्वय न मानें तो गोपद की चित्रगोस्वामी में लक्षणा, चित्रपद तात्पर्यग्राहक माना जायगा।

इसी प्रकार 'आरूढ...' यहाँ पर वानरपद की वानरारोहणकर्म में लक्षणा तथा आरूढपद को तात्पर्यग्राहक मानना होगा। अन्यस्थलों में भी ऐसे ही जानना चाहिये।

तत्पुरुष में तो पूर्वपद में लक्षणा होती है। जैसे राजपुरुष इत्यादि में राजपदार्थ का पुरुषपदार्थ से साक्षात् अन्वय नहीं; क्योंकि निपातातिरिक्तप्रातिपदिकार्थों का भेदसम्बन्ध से अन्वयबोध अमान्य है। अन्यथा राजा पुरुष यहाँ पर भी वैसा अन्वयबोध अनिवार्य हो जायगा।

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

घटः पटो न इत्यादौ घटपटाभ्यां नञः साक्षादेवान्वयान्निपातातिरिक्तेति। नीलो घट इत्यादौ नामार्थयोरभेदसम्बन्धेनान्वयाद् भेदेनेति। न च राजपुरुष इत्यादौ लुप्तविभक्तेः स्मरणं कल्प्यमिति वाच्यम्, अस्मृतविभक्तेरपि ततो बोधोदयात्। तस्माद्राजपदादौ राजसम्बन्धिनि लक्षणा, तस्य च पुरुषेण सहाभेदान्वयः।

द्वन्द्वे तु धवखदिरौ छिन्धीत्यादौ धवः खदिरश्च विभक्त्यर्थद्वित्व-

❀ प्रभा ❀

संज्ञाकरणात् इवशब्दस्य चादिगणे पाठाभावात् इति चेन्न, तत्र व्युत्पत्तौ निपातपदम् अव्ययमात्रोपलक्षकमिति (निपातपदमव्ययार्थकमेवेति) व्याख्यानेन तस्यापि संग्रहसम्भवात्। साक्षादेवेति। ननु व्युत्पत्तौ साक्षादित्यनावश्यकमिति चेन्न, भूतले घट इत्यादावाधेयतासम्बन्धेन घटभूतलयोरन्वयात् तन्निवेशावश्यकत्वात्।

राजसम्बन्धिनीति। परेतु राजपुरुष इत्यादितत्पुरुषे लक्षणां न मन्यन्ते, व्युत्पत्तिवैचित्र्येण स्वत्वादिसम्बन्धेनैव राज्ञः पुरुषादावन्वयबोधस्वीकारात्। अन्यथा 'दशैते राजमतङ्गास्तस्यैवामी तुरङ्गमाः' इत्यादौ तच्छब्देन राज्ञः परामर्शो न स्यात्, तस्यैकदेशत्वादिति वदन्ति।

द्वन्द्व इति। चार्थे द्वन्द्वः, समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थाः। तत्र समुच्चये (घटं पटं चानय) अन्वाचये (भिक्षामट गांचानय) इत्यादौ समासो न

❀ सरस्वती ❀

'घट पट नहीं, यहाँ पर नञ् का साक्षात् अन्वय इष्ट है, अतः निपातातिरिक्त यह विशेषण लगाया। नीलघट यहाँ पर प्रातिपदिकार्थों का अभेदसम्बन्ध से अन्वय अभीष्ट है, अतः 'भेदसम्बन्ध से' ऐसा निवेश किया।

यदि राजपुरुष इत्यादि में लुप्तविभक्ति के स्मरण की कल्पना करें तो अस्मृतविभक्ति से भी बनने वाला बोध बिगड़ जायगा। अतः राजपद आदि की राजसम्बन्धी में लक्षणा और उसका पुरुष के साथ अभेदसम्बन्ध से अन्वय ही माननीय होगा।

द्वन्द्व में 'धव…' यहाँ पर धव तथा खदिर दोनों ही विभक्त्यर्थ जो द्वित्व

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

प्रकारेण बुध्यते, तत्र न लक्षणा । न च साहित्ये लक्षणेति वाच्यम्, साहित्यशून्ययोरपि द्वन्द्वदर्शनात् । न चैकक्रियान्वयित्वरूपं साहित्यमस्तीति वाच्यम्, क्रियाभेदेऽपि धवखदिरौ पश्य छिन्धीत्यादिदर्शनात्, साहित्यस्याननुभवाच्च ।

अत एव 'राजपुरोहितौ सायुज्यकामौ यजेयाताम्' इत्यत्र लक्षणाभावाद् द्वन्द्व आश्रीयते । तस्मात्साहित्यं नार्थः, किन्तु वास्तवो भेदो यत्र तत्र द्वन्द्वः । न च नीलघटयोरभेद इत्यादौ कथमिति वाच्यम्, तत्र

❀ प्रभा ❀

भवति, सामर्थ्यविरहात् । केवलं समाहारे इतरेतरयोगे च समासो द्वन्द्वाख्यः । फलतः साहित्ये द्वन्द्व इति प्रवादः । तच्चसहवृत्तित्वरूपं साहित्यम् एकक्रियान्वयित्वरूपंच । साहित्यशून्ययोः द्वन्द्वो न भवति अपितु साहित्यसम्पन्नयोरेवेति मतं क्षिपन्नाह साहित्येति । एकदेशवृत्तित्वरूपं प्रथमं साहित्यं तु न वक्तुं शक्यते, तादृशसाहित्यशून्ययोरपि द्वन्द्वदर्शनात् । द्वितीयं खण्डयितुं शङ्कते नचेति । एकक्रियान्वयित्वं च एकविषयतानिरूपितसंसर्गतानिरूपितशाब्दबोधीयविषयत्वम् । वस्तुतस्तु विरुद्धानामपि कालिकसम्बन्धेन सहवृत्तित्वमक्षतमेवेति न क्वापि तत्पक्षे द्वन्द्वानुपपत्तिः । साहित्ये द्वन्द्व इति पक्षं निरस्य सिद्धान्तमाचष्टे किन्त्विति । यत्र भेदस्तत्रैव चकारः प्रयुज्यत इति चार्थस्य भेदव्याप्यत्वाद् भेदे द्वन्द्व इति हृदिकृत्याह भेद इति ।

❀ सरस्वती ❀

उसके प्रकार से भासित होते हैं, अतः लक्षणा की आवश्यकता नहीं । साहित्य में लक्षणा होती है ऐसा भी कहना ठीक नहीं, क्योंकि साहित्यशून्य पदों का भी द्वन्द्वसमास मिलता है । यदि कहें कि एकक्रिया में अन्वयित्वरूप साहित्य रहेगा ही तो यह भी उचित नहीं, क्योंकि क्रिया के भेद रहने पर द्वन्द्व देखा जाता है । वहाँ साहित्य का भी अनुभव नहीं होता ।

अत एव 'राजपुरो…' यहाँ पर लक्षणा न होने से द्वन्द्वसमास होता है, अतः साहित्य कोई वस्तु यहाँ अपेक्षित नहीं, अपितु वास्तविक भेद जहाँ पर हो वहाँ ही द्वन्द्व होता है । नीलघट का द्वन्द्व बनाने के लिए यह कहना होगा कि

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

नीलपदस्य नीलत्वे, घटपदस्य घटत्वे लक्षणा, अभेद इत्यस्य चाश्रयाभेद इत्यर्थात् ।

समाहारद्वन्द्वे तु यदि समाहारोऽप्यनुभूयत इत्युच्यते, तदाऽहिनकुलमित्यादौ परपदेऽहिनकुलसमाहारे लक्षणा, पूर्वपदं तु तात्पर्यग्राहकम् । न च भेरीमृदङ्गं वादयेत्यत्र कथं समाहारस्यान्वयस्तस्यापेक्षाबुद्धिविशेषरूपस्य वादनासम्भवादिति वाच्यम्, परम्परासम्बन्धेन तदन्वयात् । एवं पञ्चमूलीत्यादावपि ।

परे तु अहिनकुलमित्यादौ अहिर्नकुलश्च बुध्यते, प्रत्येकमेकत्वान्वयः । समाहारसंज्ञा च यत्रैकत्वं 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य' इत्यादिसूत्रेणोक्तं तत्रैव,

❀ प्रभा ❀

आश्रयाभेद इति । केचित्तु पदार्थत्वम् पदजन्यप्रतीतिविषयत्वम्, तथा च पदभेदे, पदार्थभेदे, पदार्थतावच्छेदकभेदे वा द्वन्द्व इति । नीलघटयोरित्यत्र तु नीलत्वघटत्वयोः पदार्थतावच्छेदकयोर्भेदाद् द्वन्द्वः । वादनासम्भवेति । शब्दजनकसंयोगानुकूलव्यापारो वादनपदार्थः । परम्परासम्बन्धेनेति । स्वाश्रयवृत्तित्वरूपेणेत्यर्थः । तदन्वयात् = वादनकर्मत्वान्वयात् । नव्यमतमाह परे त्विति ।

❀ सरस्वती ❀

नीलपद की नीलत्व में, घटपद की घटत्व में लक्षणा, अभेद का अर्थ आश्रय का अभेद कहना होगा ।

समाहारद्वन्द्व में तो यदि समाहार का भी अनुभव होता है ऐसा कहें तो अहिनकुल यहाँ पर परपद की अहिनकुलसमाहार में लक्षणा और पूर्वपद तात्पर्यग्राहक ऐसा मानना ही होगा ।

भेरी मृदङ्गं···इस स्थल में अपेक्षाबुद्धिविशेषरूप समाहार का अन्वय कैसे ? क्योंकि उसका बजाना असम्भव है, अतः परम्परासम्बन्ध से अन्वय मानना चाहिये । इसी प्रकार पञ्चमूली इत्यादि में भी ।

दूसरे तो कहते हैं कि अहिनकुलम् यहाँ पर अहि तथा नकुल का बोध होता है, प्रत्येक में एकत्व का अन्वय होता है, समाहारसंज्ञा तो जहाँ पर 'द्वन्द्वश्च···'

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

अन्यत्रैकवचनमसाध्वित्याहुः।

पितरौ श्वशुरावित्यादौ पितृपदे जनकदम्पत्योः, श्वशुरपदे स्त्रीजनकदम्पत्योर्लक्षणा। एवमन्यत्रापि। घटौ इत्यादौ न लक्षणा, घटत्वेन रूपेण नानाघटोपस्थितिसम्भवात्।

कर्मधारयस्थले तु, नीलोत्पलमित्यादावभेदसम्बन्धेन नीलपदार्थ उत्पलपदार्थे प्रकारः, तत्र च न लक्षणा।

अत एव 'निषादस्थपतिं याजयेत्' इत्यत्र न तत्पुरुषः, लक्षणापत्तेः, किन्तु कर्मधारयः, लक्षणाभावात्। न च निषादस्य सङ्करजातिविशेषस्य वेदानधिकाराद्याजनासम्भव इति वाच्यम्, निषादस्य विद्याप्रयुक्तेस्ततः

❀ प्रभा ❀

वेदानधिकारादिति। स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् इति श्रुत्या निषेधादिति भावः। ननु निषादस्य विद्याकल्पने गौरवमित्यत आह लाघवेनेति। ननु स्त्रीशूद्रौ इति श्रुतेरप्रामाण्यापत्तिभिया लाघवमकिञ्चित्करम्। शूद्रपदस्य निषादेतरशूद्रपरत्वे निषादस्य वेदान्तराध्ययनप्रसङ्गः, अध्ययनपदस्य यागोपयुक्ताध्ययनेतराध्ययनपरत्वे च शूद्रान्तरस्यापि यागोपयुक्ताध्ययनप्रसङ्ग इति चेन्न, तत्र विशेषतः प्राप्ताध्ययने-

❀ सरस्वती ❀

इस सूत्र से उक्त एकत्व कहा है वहीं पर होगी। अन्यस्थानों में एकवचन साधु नहीं।

'पितरौ श्वशुरौ' यहाँ पर पितृपद की जनकदम्पती तथा श्वशुरपद की स्त्री के जनकदम्पती में लक्षणा है। इसी प्रकार अन्य स्थलों में भी। घटा इस स्थल में लक्षणा नहीं, क्योंकि घटत्वेन नानाघट की उपस्थिति होती ही है।

'नीलोत्पलम्' इत्यादि कर्मधारयस्थल में तो अभेदसम्बन्ध से नीलपदार्थ उत्पलपदार्थ में प्रकार है। वहाँ लक्षणा नहीं।

अत एव 'निषाद…' इस स्थल में लक्षणा के भय से तत्पुरुषसमास नहीं, किन्तु कर्मधारय ही होता है। यदि यह कहें कि शूद्र मात्र को वेद नहीं पढ़ना चाहिये ऐसा शास्त्रसिद्धान्त है पुनः याग के लिये वह सङ्करजातिनिषाद कैसे अधि-

❀ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ❀

एव कल्पनीयत्वात्। लाघवेन मुख्यार्थस्यान्वये तदनुपपत्त्या तत्क... अन्य... फलमुखगौरवतयाऽदोषत्वादिति।

उपकुम्भमर्धपिप्पलीत्यादौ परपदे तत्सम्बन्धिनि लक्षणा, पूर्वपद... प्रधानतया चान्वयबोध इति। इत्थञ्च समासे न क्वापि शक्तिः, ... शक्त्यैव निर्वाहादिति।

❀ प्रभा ❀

तराध्ययनपरत्वात् अध्ययनपदस्य। तेन निषादस्य यागोपयुक्ताध्ययनेतरा... निषेधः, शूद्रान्तरस्य तु अध्ययनमात्रनिषेध इति। उपकुम्भेति। कु... समीपमित्यस्वपदविग्रहो नित्यसमासोऽव्ययीभावः। कुम्भपदलक्षितस्य कुम्... न्विनः उपपदार्थसमीपे अभेदान्वयात् कुम्भसम्बन्ध्यभिन्नसमीपम् इति उ... विशेष्यकोऽन्वयबोधः। अर्द्धं पिप्पल्या इति विग्रहे 'अर्द्धं नपुंसकम्' इति ... नीयेन समासः।

'समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत्' इति वैयाकरणमतीय... शक्तिवादं खण्डयन्नुपसंहरति इत्थं चेति। समासघटकीभूतपदशक्तिलक्षणा... निर्वाहात् समासशक्तिस्वीकारो नोचित इति भावः।

❀ सरस्वती ❀

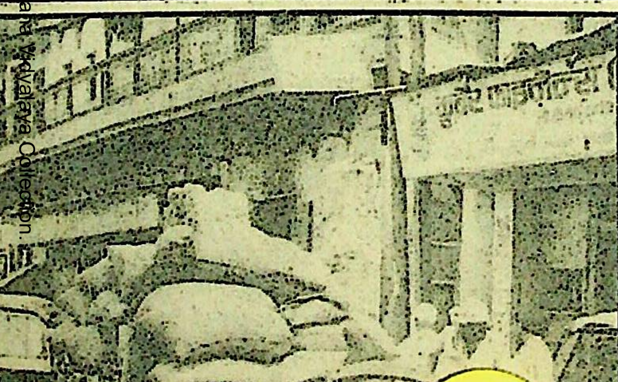
कारी बनाया जा सकेगा? तो इस श्रुति से ऐसा अधिकार उक्त होने के ... विद्या की भी कल्पना कर ली जायगी। लाघव से मुख्यार्थ के अन्वय में वह ... पन्न हो जायगा, अतः फलमुख गौरव को सह्य मानकर वह कल्पना अनुचित ...

उपकुम्भम्, अर्द्धपिप्पली इत्यादि समासस्थल में परपद की तत्सम्ब... लक्षणा, पूर्वपदार्थ की प्रधानता से अन्वयबोध होता है।

इस प्रकार पदशक्ति से ही निर्वाह हो जायगा, किसी भी समास में ... मानना आवश्यक नहीं।

...क मिजाजी महंगी पड़ी

...राणसी)। चकिया थाने का एक ...क लेकर वाराणसी प्रतिदिन जाता ... जीप में बैठकर जब बुधवार को ...ा रहा था तो बगल में बैठे ... के एक छात्र जो कि चकिया क्षेत्र ... का निवासी था के साथ छेड़छाड़ ...ा यह क्रिया बबुरी तक चला। ... लड़के ने विरोध किया जिस पर ...क और छात्र ने पूछा कि क्या बात है तो उसने पूरी बात बता दी जिस पर दोनों छात्रों ने चालक से कहा कि गाड़ी कहीं मत रोकना जीप सीधे बी.एच.यू. ले चलें और सिपाही की जीप में ही चप्पल एवं थप्पड़ से पिटाई शुरु कर दी। जीप में अन्य यात्री भी सवार थे जिन्हें मुगलसारय उतारना था। जीप मुगलसराय टैक्सी स्टैन्ड में रुकी तो खखड़ा निवासी छात्र सिपाही को उतार कर उसकी वर्दी पिटाई की बाद में लोगों के समझाने पर मामला शांत हुआ।



...पटरियों के किनारे बड़े-बड़े गड्ढे तथा दरार पड़ गये हैं। इसी तरह अहरक से बाबतपुर के बीच गत महीनों पूर्व कंकड़ बिछाकर मिट्टिया डालकर छोड़ दिये जाने से एक तरफ जहां कंकड़ उखाड़कर यात्रियों को चलना दूभर कर दिया है वहीं दूसरी तरफ बरसात होते ही बड़े-बड़े गड्ढे हो गये हैं।

नागरिकों ने बताया कि उक्त मार्ग पर स्थित दल्लीपुर ड्रेन पर बने निर्माणाधीन पुल में घटिया किस्म का ईंट का प्रयोग किया गया है जिससे पुल के दोनों तरफ दरार बन गये हैं। नागरिकों का कहना है कि यदि भारी बरसात हुई तो पुल ध्वस्त भी हो सकता है।

कोलअसला क्षेत्र के पूर्व विधायक ...मकरन पटेल ने बताया कि उक्त ड्रेन पर बने पुल के निर्माण में भारी अनियमितता किया गया है। जिसकी अभी से बरसात ने कलई खोल दी है।

उन्होंने संबंधित उच्चाधिकारियों से अधूरे मार्ग को पिच कर सड़क की पटरियों के साथ-साथ ध्वस्त होने के कगार पर पहुंचे पुल के पुनः मरम्मत कराने की मांग की है।

विद्यापीठ के छात्राव...

वाराणसी। काशीविद्यापीठ में गृहपतियों तथा समाजकल्याण संकाय के सदस्यों की बैठक में छात्रावास को २६ जून से खोलने तथा...

...कि चुनाव
...तादल का
...श्री
उन्होंने
, लेकिन
...र कर
...गांधी जी
...
...अनुसार
...स्लिम म
...
...क जि
...कि सभी
...मृत्यु
...नाव प्रचार अभियान कांग्रेस द्वारा किए
...बाद ही शुरू करेगी।
...के कार्यकर्ता श्री तजम्मुल हुसैन के
...श्री राजीव गांधी की हत्या से देश को
...बड़ा आघात पहुंचा है। उनके जीवित
...की दशा में श्री चन्द्रशेखर व श्री
...सिंह की व्यक्तिगत छवि के कारण
...स्लिम मत उनकी पार्टी में जाने की
...है।
...त सम्भावनाओं के अतिरिक्त

...जीद उर्फ मन्ना तथा पहले मुलायम सिंह के ...र सहित कांग्रेस को वोट ...के हैं।

...ारी तथा लकड़ी विक्रेता ...विक्रेता मजहर शमशी, ...कि श्री राजीव गांधी की ...का फर्ज है कि कांग्रेस को ...एं।

...मद शफीक का कहना है ...व गांधी की मौत से हुई ...में किया जा सकता है। ...पूरा करने हेतु हम सभी ...ना चाहिए।

ग्राम ढिलवरी के प्रधान तथा बड़े कृषक श्री सरताज अली के अनुसार कि ऐसी परिस्थिति में कांग्रेस को वोट देना सभी का फर्ज बन जाता है।

क्या परिणाम होंगे, इसको लेकर प्रत्याशी, कार्यकर्ताओं से लेकर जनता तक विचार मग्न हैं, लेकिन फिर भी एक बात निश्चित रूप से उभर पर आयी है। कि क्षेत्र का मुस्लिम मतदाता जो पूर्णतया निर्णय न ले पाने की स्थिति में तितर-बितर हो रहा था, अब उसका रुझान कांग्रेस की ओर को हुआ है।

...पा प्रत्याशियों को कोई नहीं: कांशीराम



बिहार शरीफ में मतदान की पूर्व संध्या पर जब्त किये गये अवैध अ...

मध्य प्रदेश में इस बा...

भोपाल, १३ जून (वा.)। दसवीं लोकसभा के लिए मध्य प्रदेश में दो चरणों में हुआ मतदान १९८९ के चुनाव की तुलना में काफी कम रहा है। मध्य प्रदेश में ५० प्रतिशत से कम मतदान होना का यह दूसरा अवसर है।

वर्ष १९८९ में ५५.३५ प्रतिशत मतदान हुआ था, जबकि इस बार केवल ४१.२५ प्रतिशत मतदाताओं ने ही अपने वोट डाले।

वर्ष १९७१ में पहली बार इस राज्य में ५० प्रतिशत से कम मतदाताओं ने चुनाव में भाग लिया था। तब ४८ प्रतिशत वोट पड़े थे।

राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रदीप बैजल ने भी कल रात संवाददाताओं के साथ चर्चा करते हुए इस कमी पर हैरानी व्यक्त की।

राज्य में गत २० मई को चुनाव के पहले चरण में २८ निर्वाचन क्षेत्रों में से केवल ४० प्रतिशत ही मतदान हुआ था। तब भीषण गर्मी और विवाहों के मौसम को इस कमी के लिए उत्तरदायी ठहराकर राजनीतिक प्रेक्षकों ने संतोष कर लिया था। अब जिन क्षेत्रों में मतदान हुआ है, वहां उक्त दोनों कारण नदारत थे।

सात-आठ जून को जमकर वर्षा हो जाने के कारण न केवल तापमान गिर गया था...

४७.८४, दमोह ४२.५२, सतना... ४१.८६, सीधी (सु.) ३६... ३५.७० सरगुजा (सु.) ३... ४४.८५, जांजगीर ३८.१... ३८.९४, सारंग (सु.) ... ४६.९८, महासमुंद ४७.२... तथा बस्तर २७.४६।

कल कुछ प्रेक्षकों का यह ... सिद्ध हुआ कि पूर्व प्रधानमंत्री ... २१ मई को हुई हत्या ...

अपनी जी...

(लखनऊ कार्याल...)

हैदरगढ़ (बाराबंकी) १३ जून... क्षेत्र हैदरगढ़ से चुनाव मैदान में ... विधायक एवं भाजपा प्रत्याशी सुं... सुरेन्द्र नाथ अवस्थी (इंका), राज... सिंह (जनता दल), हरीराम ...